18 वां अंक | अर्द्धवार्षिक | जनवरी - जून 2021

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुरभि

: कार्यालय :
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -II), ओड़िशा, भुवनेश्वर
महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I), ओड़िशा, भुवनेश्वर
महानिदेशक - लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) हैदराबाद, शाखा कार्यालय,
ओड़िशा, भुवनेश्वर - 751001

सुरभि परिवार

परामर्शदातृ समिति

प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - II)
महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - I)
उपमहालेखाकार
प्रशासन (लेखापरीक्षा - I)
वरि. उपमहालेखाकार
प्रशासन (लेखापरीक्षा - II)
उपनिदेशक
(केन्द्रीय राजस्व लेखापरीक्षा)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
श्री राहुल प.
उपमहालेखाकार / प्रशासन
सह संपादक
श्री अशोक कुमार पण्डा
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती शुभस्मिता आचार्य
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री कपिलास प्रधान
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री सुब्रत नायक
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री मंजेश परासर
वरि. अनुवादक
श्री गिरराज शरण अग्रवाल
वरि. अनुवादक
श्री शैलेन्द्र कुमार
वरि. अनुवादक
श्री लोकेश चंद्र लाल
कनि. हिंदी अनुवादक
श्रीमती मोनिका चौहान
कनि. अनुवादक
सुश्री दीपिका चटर्जी
कनि. अनुवादक
श्री जीतेन्द्र कुमार
डीईओ

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं
1.	कार्यालय में हिंदी	लोकेश चंद्र लाल	7
2.	हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर	गिरराज शरण अग्रवाल	9
3.	कार्तिक पूर्णिमा – बालियात्रा – कागज की नाव	श्रीमती मीनाक्षी आचार्य	11
4.	सम्मान	श्रीमती मोनिका चौहान	13
5.	मेरा भारत महान	श्री रितुध्वज	18
6.	धनु यात्रा– विश्व का सबसे बड़ा मुक्ताकाश रंगमंच	श्री अमित कुमार प्रधान	21
7.	ऑनलाइन कक्षा और बच्चे	श्री आशीष रंजन	22
8.	मेरा गाँव	श्री सतीश कुमार	23
9.	मौन	श्री शैलेन्द्र कुमार	24
10.	लॉकडाउन	श्री अखिल जेना	26
11.	इंकार	श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव	27
12.	चल मुझे तू बता	सुश्री प्रीति चंदा	29
13.	आज को जी लीजिए	सुश्री ज्योति	30
14.	जिंदगी	श्रीमती स्वीटी गुप्ता	31
15.	कामयाबी की तलब	सुश्री पूजा चौहान	32
16.	पिता का प्यार भला कौन समझ सकता है	राजेश कुमार झा	33
17.	भारत में बढ़ता शहरीकरण	श्रीमती निभा रंजन	36
18.	गीता सार	श्री रितुध्वज	38
19.	तेरा गाँव	श्री अखिल जेना	40
20.	मिशन मंगल : नासा	श्री प्रदीप कुमार नंदा	41
21.	कार्यालय का आकर्षण केंद्र – बागीचा	श्रीमती मोनिका चौहान	43
22.	हिंदी विशेष	अंकीता कुमारी अजय	50
22.	श्री जगन्नाथ मंदिर – यमशिला	श्री कालीप्रसाद मिश्र	53

संदेश

श्री बिभुदत्त बसंतिया

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा - II) ओड़िशा, भुवनेश्वर

अपनी भाषा के प्रति लगाव राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है और हिंदी ने संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है। वर्तमान में हिंदी ने भी विश्व पटल पर अपनी पहचान हासिल की है । हिंदी हमारी पहचान भी है, संवैधानिक दायित्व भी है। इसी क्रम में कार्यालय में हिंदी का अधिकतम एवं सहज प्रयोग भी हम सभी का नैतिक एवं सवैधानिक दायित्व है ।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 18वें (अर्द्धवार्षिक) अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन में कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों का योगदान सराहनीय है । सभी रचनाकारों का योगदान प्रशंसनीय है। सभी रचनाकारो एवं संपादक मडंल के सभी सदस्यों को पत्रिका हेतु योगदान के लिए साधुवाद देता हूँ ।

(बिभुदत्त बसंतिया)

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा – II) ओड़िशा, भुवनेश्वर

संदेश

स्मृति

महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

हमारे कार्यालय की अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'सुरभि' का 18वां अंक प्रस्तुत करने में अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। वार्षिक पत्रिका की भांति ही अब अर्द्धवार्षिक पत्रिका भी निरंतर आगे बढ़ती जा रही है । राजभाषा का प्रचार प्रसार हमारा कर्तव्य है और इस कर्तव्य के निर्वहन के लिए 'सुरभि' एक सशक्त माध्यम बन चुका है। कार्यालय के कर्मचारियों ने अपने विचारों को खूबसूरती के साथ इस पत्रिका में प्रस्तुत किया है । हिंदी भाषा के प्रयोग तथा उसे लोकप्रिय बनाने में सुरभि पत्रिका का योगदान अपरिमित रहा है ।

मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों, रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को विशेष रूप से धन्यवाद एवं बधाई देती हूँ। साथ ही पाठकों को भी मेरी तरफ से बहुत बहुत आभार।

(स्मृति)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

संपादकीय...

राहुल प.

उपमहालेखाकार (प्रशा.)

सबसे पहले हिंदी गृह पत्रिका 'सुरभि' के सभी रचनाकारों को हृदय से आभार व्यक्त करना चाहूंगा। यह गौरवपूर्ण है कि आप इस सुंदर पत्रिका को जमीन पर उतारने का कारण बने हैं। मेरा मानना है कि स्वाधीनता का पूर्ण स्वाद तब तक नही चखा जा सकता जब तक एक राष्ट्र अपनी राजभाषा को पूर्ण रुप से जीवंत न कर ले। हम उसी दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं और यही वजह है कि हम वार्षिक से अर्द्धवार्षिक पत्रिका का प्रकाशन सफल रुप से कर पा रहे हैं।

कार्यान्वयन के दो स्तंभ प्रेरणा एवं प्रोत्साहन का उपयोग करते हुए हम हमेशा राजभाषा को शीर्ष पर पहुंचाने के प्रयास हेतु तत्पर हैं। इस अंक में हमने जिंदगी के बहुत सारे पहलुओं को समेटने की कोशिश की है। यद्यपि हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है हमारे संपादक मंडल एवं रचनाकारों ने आप तक अच्छी हिंदी पंहुचाने का प्रयास किया है।

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़े पर हमारी 'सुरभि' प्रकाशन को तैयार है और अपने स्पंदन के प्रभाव को पाठकों के मन-मस्तिष्क में घोलने को बेचैन है।

आपके सुझाव एवं प्रतिक्रिया आमंत्रित किए जाते हैं।

(राहुल प.)

उपमहालेखाकार (प्रशा.)

अन्न कार्यालयों से प्राप्त प्रशंसा पत्र

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, उत्तर खंड
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2020/25 दिनांक-03.03.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
सचिवालय मार्ग, एजी चौक,
भुवनेश्वर -751001

विषय- ई-पत्रिका **"सुरभि"** के **17वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका **"सुरभि"** का **17वाँ** अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ हमारे विचार से प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री सतीश कुमार, वरि. लेखापरीक्षक	हम हैं मज़दूर
2.	श्रीमति कमला नायक,वरि. ले.प.अधि.(सेवानिवृत)	प्रतिबिम्ब
3.	श्री लोकेश चंद्र लाल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	शब्द कुछ कहते हैं
4.	सुश्री प्रीति प्रज्ञा नायक	नीम

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
दीपक दास 03/03/21
(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/राजभाषा

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक)
तमिलनाडु, चेन्नई-18
टेलीफ़ोन: 044-24324530 फैक्स: 044-24320562
Website : www.agae.tn.nic.in

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, CHENNAI-18
Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562
Website : www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/ 47361 दिनांक 11.02.2021
61

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - I),
सचिवालय मार्ग,
ओडिशा, भुवनेश्वर - 751001

Senior Audit Officer(Hindi)
Office of the Accountant General
(Audit-I), Sachivalaya Marg,
Odisha,
Bhubaneswar - 751001

*विषय : आपकी गृह हिंदी पत्रिका **'सुरभि'** की पावती के संबंध में*

महोदय,

*आपके कार्यालय की पत्रिका **'सुरभि'** का 17 वाँ अंक (वर्ष 2021) प्राप्त हुआ इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। **इस अंक मे प्रकाशित श्री आशीष रंजन द्वारा लिखित आलेख 'राजभाषा हिन्दी की वर्तमान दशा' तथा सुश्री ज्योति द्वारा लिखित कविता 'लॉकडाउन' अत्यंत स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं।** राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रकम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।*

भवदीय
(सुभाष चंद्र यादव)
हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल
ट्रेज़री बिल्डिंग्स,2 गवर्नमेण्ट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता- 700 001

संख्या : हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/288 **दिनांक**:10.02.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर - 751 001

विषय : हिंदी गृह-पत्रिका "सुरभि" के 17वें अंक के ई-पत्रिका की पावती।

महोदय,

पत्र क्रमांकः हि. प्रको./सुरभि (07)/2020-21/160-241, दिनांकः 02.02.2021 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका "सुरभि" के 17वें अंक की ई-प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय है। आपका कार्यालय के "ग" क्षेत्र में होते हुए भी हिन्दी के प्रति इतनी सहभागिता अत्यंत ही सराहनीय है। विशेष रूप से श्री आलोक कुमार झा द्वारा लिखा गया लेख "छात्र संघर्ष" अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका के संपादन मंडल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु ढेर सारी शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा: भुवनेश्वर - 751001
O/o the Pr. Accountant General (A&E), Odisha, Bhubaneswar - 751001

संख्या-हिप्र/पत्रिका/70 दिनांक 12/02/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
ओड़िशा, भुवनेश्वर-751001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" के 17वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" के 17वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। जिनमें से श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव की रचना "जीवनदान", श्री जितेंद्र कुमार की रचना "अंहकार", श्री गिरराज शरण अग्रवाल की रचना "नसीब है कि जिंदगी नसीब है", श्री सतीश कुमार की रचना "हम मजदूर हैं" एवं सुश्री प्रतिभा कुमारी की रचना "दशहरे की उषाकाल" आदि विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उत्कृष्ट साज-सज्जा एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई प्रेषित है।

हिंदी अधिकारी

2/16/2021

Gmail The ACCOUNTANT GENERAL AU-I ODISHA BBSR HindiCell <hindicellgssa@gmail.com>

हिंदी ई-पत्रिका " सुरभि" के 17वें अंक वर्ष 2021की पावती ।

1 message

Uday Pratap Singh <hindicell.kar.ae@cag.gov.in> Tue, Feb 16, 2021 at 12:49 PM
To: hindicellgssa@gmail.com

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KARNATAKA, BENGALURU

सं.प्र.म.ले.(ले.व.ह.)हिं.क./गृ.पत्रि.पा.प्रे./2020-21/144 दिनांक:.11.02.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा –I)
ओडिशा, भुवनेश्वर-751001

विषय- हिंदी ई-पत्रिका " सुरभि" के 17वें अंक वर्ष 2021की पावती ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी वार्षिक ई-पत्रिका "सुरभि" के 17वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। शैलेंद्र कुमार की 'एफ5', लोकेश चंद्र पाल की 'शब्द कुछ कहते हैं', मोनिका चौहान की 'हिंदी भाषा का प्रयोग-जहाँ चाह, वहाँ राह', सतीश कुमार की 'हम मजदूर हैं', श्री लोकेश कुमार की 'वन संपदा' आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

भवदीया,
ह/-
(शिवप्रिया
वरिष्ठ
वी.)
लेखाधिकारी/ मा.सं.वि.

https://mail.google.com/mail/u/0?ik=22c9f66a4a&view=pt&search=all&permthid=thread-f%3A1691835447930176472%7Cmsg-f%3A1691835447... 1/1

OM-III(G&SSA)ORDY.Dy.No 306

सत्यमेव जयते

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)
Office of the Director General of Audit (Home, Education and skill Development)
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली –110 002
Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

सं.रा.भा.अ./2-9/प्रशंसा-पत्र/2020-21/201 दिनांक: 23/03/2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय,
सचिवालय मार्ग, ओड़िशा, भुवनेश्वर-751001

08 APR 2021
O/o the A.G.(Audit-I)Odisha, Bhubaneswar

विषयः हिन्दी गृह पत्रिका "सुरभि" के 17वें अंक की पावती सह प्रशंसा पत्र।

कृपया आपके कार्यालय के पत्र सं. हि.प्रको./सुरभि(07)/2020-21/160-241 दिनांक 02.02.2021 का संदर्भ लें जिसके द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में अर्धवार्षिक पत्रिका "सुरभि" के 17वें अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाएं उत्तम स्तर की है। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। साहित्य की सभी विधाओं में रचनाएं बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णित हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में सृजनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कार्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। इस पत्रिका का मैंने अध्ययन किया, इसमें वर्णित सभी तथ्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। एक बार पुनः हृदय से धन्यवाद।

भवदीय,
23/3/21
(मुकेश कुमार यादव)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
दूरभाष- 01123454268

Ph. : 91-11-23702422
Fax : 91-11-23702271

DGACR, Building, I.P. Estate, New Delhi-110 002
e-mail : pdahesd@cag.gov.in

दूरभाष/Telephone- 2223251, 2225766, 2224812

सत्यमेव जयते

फैक्स/ Fax 0612-2225977
तार / Tele Gram ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हिन्दी कक्ष/लेखा/पत्रिका-जवाब/(2020-21)/141

दिनांक 15/03/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी प्रकोष्ठ,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-।।),
ओडिशा, भुवनश्वर- 751001.

विषय :- हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका 'सुरभि' के 17वें अंक की ई-प्रति प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 15/02/2021 के द्वारा हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका 'सुरभि' के 17वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री अखिल जेना की रचना 'कुनी', श्रीमती मीनाक्षी आचार्य की रचना 'कविता' एवं सुश्री प्रीति प्रज्ञा नायक की रचना 'नीम' काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,
वरीय लेखा अधिकारी,
(हिन्दी कक्ष)

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एंव पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER AUDIT BOARD, BENGALURU -560001.

सं.हि.प्रशा.-2020-21/ 142 **दिनांक**-08.02.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /हिंदी,
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) हैदराबाद ,
शाखा कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर - 751001

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका (ई-पत्रिका) "सुरभि" के 17वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित सामग्री उच्च स्तर की है।विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है । श्री शैलेन्द्र कुमार का लेख "एफ-5" श्रीमती मोनिका चौहान का लेख "हिंदी भाषा का प्रयोग" श्री लोकेश कुमार का लेख "वन सम्पदा" श्री गिरराज शरण अग्रवाल की कविता "चलो आज फिर से पहले वाली होली मनाएं" आदि पठनीय एवं प्रशसनीय हैं। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीय

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

कार्यालय में हिंदी

लोकेश चंद्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

किसी भी स्वतंत्रता प्राप्त देश की आधिकारिक राष्ट्रभाषा उसके सम्मान और गौरव में चार चाँद लगाती है। भारत 26 जनवरी 1950 को गणतन्त्र राष्ट्र बना । भारत के संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 120, 210 एवं 343 से 351 तक संघ की भाषा एवं इसके विभिन्न प्रावधान सम्मिलित किए गए हैं । 1963 में राजभाषा अधिनियम बना जिसे बाद में संशोधित रूप में पुन: 1967 में प्रकाशित किया गया । राजभाषा संकल्प 1968 एवं राजभाषा नियम 1976 का निर्माण हुआ । इन नियमों एवं अधिनियम के निर्माण का मुख्य उद्देश्य देश की राजभाषा के रूप में हिंदी को मान्यता देना था । कतिपय कारणों से हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अब तक वह मान्यता नहीं मिल सकी है लेकिन राजभाषा के रूप में समस्त सरकारी कामकाज में विशेषकर केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में इसके प्रयोग पर बल दिया जाता है तथा उपर्युक्त प्रावधानों के अधीन यह अपेक्षा की जाती है कि इसके प्रयोग, प्रचार एवं प्रसार के लिए समस्त कर्मचारी प्रयासरत रहेंगे ।

कार्यान्वयन में सुविधा हेतु भाषा के आधार पर भारत को क्रमश: 'क', 'ख' एवं 'ग' भागों में विभाजित किया गया है । 'क' क्षेत्र के अंतर्गत उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ, झारखंड, उत्तराखंड और दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, केंद्र शासित राज्य आते हैं । 'ख' क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब तथा चंडीगढ़ संघ राज्य आते हैं। उपरोक्त 'क' तथा 'ख' राज्यों के अतिरिक्त अन्य सभी राज्य 'ग' क्षेत्र में आते हैं। सरकारी कार्यों के लिए पत्राचार हेतु इन राज्यों में विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किये गए हैं । इन लक्ष्यों के आधार पर यह निर्धारित है कि 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के राज्यों के केंद्रीय सरकार के कार्यालय आपस में जो भी पत्राचार करें वह शत प्रतिशत हिंदी में करें तथा 'ग' क्षेत्र के कार्यालयों के लिए पत्राचार का लक्ष्य 55 प्रतिशत तथा पृष्ठवार टिप्पणी लेखन का लक्ष्य 30 प्रतिशत हैं ।

भारत सरकार के राजभाषा अधिनियम 1963 के धारा 3 (3) के अनुसार पत्राचार के कुल 14 स्वरूप हैं जिन्हें आवश्यक रूप से द्विभाषी रूप में जारी किया जाता है । वे कागजात हैं – 1. सामान्य आदेश (General Order) 2. संकल्प (Resolution) 3. नियम (Rules) 4. प्रेस विज्ञाप्ति (Press Communique) 5. अधिसूचना (Notification) 6. प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट (Administerative & Other Reports) 7. सूचना (Notice) 8. निविदा (Tender) 9. संविदा (Contract) 10. करार (Agreement) 11. अनुज्ञाप्ति (License) 12. अनुज्ञापत्र (Permits) 13. संसद के किसी सदन या सदनों में प्रस्तुति हेतु प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट (Administrative & Other Reports to be laid before a House or the House of Parliament) 15. संसद के किसी सदन या सदनों में प्रस्तुति हेतु शासकीय कागजात Official Papers to be laid before a House or the houses of Parliament इसके अतिरिक्त नियम 5 के तहत यह भी अपेक्षित है कि हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाए । उपर्युक्त प्रावधानों को शत

प्रतिशत पालन अनिवार्य होता है तथा इसमें चूक को राजभाषा नियम/अधिनियम का उल्लंघन माना जाता है ।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में विभिन्न प्रांतों से कर्मचारी आते हैं जिनकी अलग-अलग भाषाएँ होती हैं । केंद्र सरकार के कार्यालयों में विशेष रूप से हिंदी में कामकाज पर बल दिया जाता है । लेकिन हिंदीतर भाषा-भाषी होने के कारण हिंदी के कार्यान्वयन में काफी बाधाएँ आती हैं।

इसलिए उन्हें हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान हेतु हिंदी शिक्षण योजना की तरफ से विभिन्न हिंदी प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है ।

मैट्रिक या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी के साथ उत्तीर्ण कार्मिक को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिक माना जाता है तथा जिनकी मातृभाषा हिंदी है एवं शिक्षा का माध्यम हिंदी है उन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त माना जाता है । हिंदीतर क्षेत्र के कार्मिकों को विभिन्न स्तरों पर हिंदी का प्रशिक्षण देने के लिए भारत सरकार द्वारा हिंदी शिक्षण योजना के तहत प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ व पारंगत का प्रशिक्षण दिया जाता है । इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को उत्तीर्ण करने पर एकमुश्त नकद पुरस्कार व वेतन वृद्धि का प्रावधान है ।

एक बड़ी सच्चाई यह है कि हिंदीभाषी कर्मचारी भी सरकारी कामकाज स्वाभाविक रूप से हिंदी में नहीं कर पाते । अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों को द्विभाषी में जारी करने हेतु हिंदी में अनूदित करवाने की आवश्यकता पड़ती है । यहाँ ध्यान देने वाली बात है कि अनुवाद करते समय अधिकतर लोग शब्दानुवाद करते हैं । शब्दानुवाद कुछ हद तक ही ठीक है लेकिन कहीं – कहीं इससे अर्थ हास्यास्पद बन जाता है, कुछ अटपटा – सा लगने लगता है । ऐसे में यह सलाह दी जाती है कि भावानुवाद किया जाए । इससे भी अच्छा यह होगा कि मूल रूप से हिंदी में लिखने का प्रयास किया जाए । हालांकि हिंदीतर भाषी होने के कारण थोड़ा-बहुत व्याकरणिक भूल हो सकती है। लेकिन यह भी प्रावधान है कि कोई कार्मिक हिंदी लिखने में वर्तनी संबन्धित यदि कोई त्रुटि भी करता है तो उसे इस बात के लिए हतोत्साहित करने की बजाय प्रोत्साहित किया जाए कि उसने हिंदी में लिखने का प्रयास तो प्रारम्भ किया । ऐसा लगता है कि हिंदी में काम करना भी बड़ा टेक्निकल है। कटु सत्य तो यह है कि हिंदी में काम करने के लिए सक्षम बनाने हेतु प्राय: हर किसी को प्रशिक्षण देने की आवश्यकता पड़ती है । इसलिए हिंदी में काम करने के लिए सरकारी कर्मचारियों को सक्षम बनाने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है जिसका उद्देश्य है कर्मचारियों को समुचित प्रशिक्षण देना तथा हिंदी में काम करने के प्रति उनकी हर तरह की झिझक और परेशानी दूर करना । मूल रूप से हिंदी में कामकाज करने हेतु प्रोत्साहन के रूप में नकद पुरस्कार का भी प्रावधान किया गया है ।

कर्मचारियों में हिंदी के प्रति प्रेरणा, प्रोत्साहन, उत्साह, उमंग की जागृति के लिए प्रत्येक वर्ष हिंदी पखवाड़ा / सप्ताह का आयोजन किया जाता है जिसमें अधिक से अधिक कर्मचारी बढ़ – चढ़कर भाग लेते हैं । हिंदी पखवाड़ा या सप्ताह को इस भांति आयोजित किया जाता है जिसके दौरान हिंदी दिवस (14 सितंबर) जरुर शामिल हो । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है जैसे- हिंदी टिप्पण लेखन, हिंदी प्रारूप लेखन, हिंदी श्रुतलेखन, हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी संक्षेपण, चित्र लेखन आदि । इसके अलावा हिंदी में कई रंगारंग कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है ।

संघ की राजभाषा नीति का सार है "सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए सरकारी कर्मचारियों को पूरी तरह से सक्षम बनाना तथा हिंदी में काम करने के लिए उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करना"। ●

हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर

गिरराज शरण अग्रवाल
वरिष्ठ अनुवादक

हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा, सर्वाधिक समझी जाने वाली भाषा, भारतीय संघ की राजभाषा एवं भारत के कई राज्यों बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थाान, उत्तरप्रदेश तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजभाषा तथा कई राज्यों की सह राजभाषा, भारत की मनोरंजन उद्योग की रीढ़ है, हमारी हिंदी ।

किंतु क्या आज के समय कोई माता–पिता अपने बच्चों को हिंदी माध्यम स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं ? हम जानते हैं कि इस प्रश्न का उत्तर 'नहीं' है लेकिन क्यों, क्योंकि रोजगार के अधिकतर अवसरों में इंगलिश की आवश्यकता एवं विभिन्न विषयों की पुस्तकों का इंगलिश में होना । ऐसा मान लिया गया है कि इंगलिश का ज्ञान यानी देश के साथ साथ वैश्विक स्तर पर रोजगार प्राप्त करने की संभावनाओ में वृद्धि ।

उपर्युक्त तथ्य कुछ हद तक ठीक हो सकते हैं किंतु हिंदी में भी रोजगार की उतनी ही संभावनाएं हैं जितनी की इंगलिश में।

निम्न लिखित क्षेत्रों में हिंदी में उच्च शिक्षा एवं दक्षता होने पर रोजगार के अवसरों का द्वार खुल जाता है:

1. प्रिंट मीडिया

भारत में लगभग 57 प्रतिशत हिंदी भाषी हैं, भारत के सर्वाधिक परिचालित अखबारों में हिंदी समाचारपत्र अग्रणी स्थान रखते हैं जैसे यह दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, राजस्थान पत्रिका, पंजाब केसरी। इसके अतिरिक्त हिंदी की कई साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, वार्षिक पत्रिकाएं। इन सबके लिए अत्यधिक संख्या में हिंदी जानने, समझने, हिंदी में काम करने वाले, हिंदी में विभिन्न विषयों में लेख लिखने वाले व्यक्तियों, हिंदी में दक्ष व्यक्तियों की आवश्यकता होती है अत: इस क्षेत्र में हिंदी में दक्ष व्यक्तियों के लिए रोजगार की अपार संभावनाएं हैं ।

2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

जैसा कि हम जानते हैं कि आज का समय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का है ।

मनोरंजन उद्योग

हम जानते है कि मनोरंजन के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है और हम भारतीयों के लिए तो यह और भी विशेष महत्व रखता है । प्राइवेट चैनल आने से भारतीय दर्शकों की तो बल्ले बल्ले ही हो गई है इतने सारे मनोरंजक चैनल, रोज नए सीरियल, रोज नए रीयलटी शो, हर दो चार महीने में एक नया मनोरंजक चैनल । इन सब के लिए स्टोरी राइटर, डॉयलॉग राइटर, गाने के लिरिसिस्ट ।

इसके अतिरिक्त विदेशी प्राइवेट चैनल जैसे डिस्कवरी, सोनी अर्थ, हिस्टरी, नेशनल जियोग्राफी एवं अन्य चैनल में हिंदी से संबंधित, हिंदी में दक्ष व्यक्तियों जैसे स्क्रिप्ट राइटर, अनुवादक, उदघोषक की आवश्यकता होती है ।

समाचार चैनल

मानव स्वभाव नई सूचना के लिए निरंतर उत्सुक। ऐसे में प्राइवेट न्यूज चैनल जो 24 घंटे समाचार प्रसारित कर रहे हैं । ब्रेकिंग न्यूज को हम तक सबसे पहले पहुँचाने को आतुर । ऐसे में इस प्लेटफार्म हेतु संवाददाता, समाचार लेखक, समाचार वाचक व अन्य स्तरों पर पत्रकारिता/ मास कम्यूनिकेशन डिप्लोमा/ डिग्री के साथ ही हिंदी में

दक्ष व्यक्तियों की आवश्यकता होती है

एफ.एम. इंडस्ट्री:

क्या किसी भी चलती हुई कार की एफ.एम. रेडियो के बिना कल्पना की जा सकती है और एफ.एम. की रेडियो जॉकी के बिना ।

एफ.एम. रेडियो किसी भाषा का हो किंतु उसका मुख्यत: आधार बॉलीवुड गाने एवं किस्सें ही होते हैं अत: इस क्षेत्र में भी हिंदी में शिक्षित एवं दक्ष तथा रचनात्मक सोच वाले व्यक्तियों की सदैव मांग बनी रहती है ।

विज्ञापन उद्योग:

भारत 135 करोड व्यक्तियों का देश । इसके अतिरिक्त लगभग 3 करोड 20 लाख प्रवासी भारतीय। ये सभी विभिन्न देशी-विदेशी उत्पादों के उपभोक्ता । इसमें लगभग 57 प्रतिशत पूर्ण रूप से हिंदी बोलने एवं समझने तथा लगभग 90 प्रतिशत हिंदी समझने वाले । ऐसे में उद्योग एवं व्यापार जगत चाहे देशी हो या विदेशी, अगर अपना उत्पाद अधिकतम व्यक्तियों को बेचना है तो आम व्यक्ति की भाषा में ही बात करनी पड़ेगी । इसलिए हमने देखा है कि अधिकतर श्रृव्य एवं दृश्य विज्ञापन हिंदी में ही बनते हैं । विज्ञापन में न्यूनतम समय एवं शब्दों में अधिकतम संदेश दर्शकों के मस्तिष्क में बैठाना होता है ऐसे में हिंदी में सोचने वाले, भाषा में निपुण, रचनात्मक व्यक्तयो की आवश्यकता होती है ।

शिक्षण:

भारत में साक्षरता दर लगभग 75 प्रतिशत है जिसे लगातार बढ़ाकर शत प्रतिशत किए जाने के शासकीय एवं गैर शासकीय स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं ।

इस हेतु नये-नये विद्यालय, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की स्थापना की जा रही है । सभी विद्यालय एवं महाविद्यालयों में हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है इस हेतु नित्य नये अध्यापकों/प्राध्यापकों की आवश्यकता होती है ।

विभिन्न राज्य सरकारों एवं केंद्र सरकार द्वारा समय-समय की हिंदी शिक्षकों की भर्ती की जाती है इसके अतिरिक्त निजी विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण हेतु अध्यापकों की नियुक्ति की जाती हैं ।

वैश्वीकरण के इस युग में जब सम्पूर्ण विश्व एक ग्राम हो गया है और सभी कम्पिनयों को अपने उत्पाद भारत जैसे विशाल बाजार में बेचना है इसलिए कई देशों द्वारा उनके विश्वविद्यालयों में हिंदी सिखाई जा रही है । इस हेतु उच्च शिक्षा प्राप्त एवं हिंदी में दक्ष प्रतिभाओं की निरंतर मांग बनी रहती है ।

अनुवादक के रूप में :

वैश्वीकरण के इस युग में अनुवादकों की महत्ता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है । विभिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियां 135 करोड़ देशवासियों के देश में दौड़ी चली आ रही हैं और जैसा हम जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भाषा, संस्कति से विशेष लगाव होता है अत: कम्पनियां अधिकतम व्यक्तियों तक पहुचने हेतु अपने उत्पाद की जानकारी, विज्ञापन आदि हिंदी में बनाने के प्रयास करती हैं ऐसे में अनुवादकों की माँग बढती ही जा रही है । इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकाशन हाउस विश्व की बेस्ट सेलर किताबों एवं इंगलिश एवं अन्य भाषाओं की ज्ञान विज्ञान की पुस्तकों का अनुवाद करवाकर प्रकाशित करते हैं इस हेतु भी अनुवादकों की आवश्यतकता होती है।

जैसा कि हम जानते हैं कि हिंदी संघ की राजभाषा है अत: राजभाषा अधिनियम एवं नियम की अनुपालना हेतु भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, स्वायत्त निकायों में, सहायक निदेशक (राजभाषा), हिंदी अधिकारियों, वरिंष्ठ/कनिष्ठ अनुवादक अधिकारियों की भर्ती की जाती है ।

इसके अतिरिक्त भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों में भी अनुवादकों की भर्ती की जाती है ।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हिंदी भाषा में उच्च शिक्षा एवं दक्षता प्राप्त होने पर समाज में एक सम्मानजनक रोजगार प्राप्त करके हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया जा सकता है । ●

कार्तिक पूर्णिमा – बालियात्रा – कागज की नाव

श्रीमती मीनाक्षी आचार्य
पर्यवेक्षक

इस वर्ष कोरोना महामारी के चलते लॉकडाउन और शटडाउन के सिलसिले में सभी छोटे–बड़े तीज त्योहारों पर रोक लग गई । सभी धार्मिक स्थानों पर आमलोगों को जाने की पाबंदी थी और मार्च–2020 से शुरु करके दिसम्बर 2020 तक जितने भी उत्सव आए सभी पर रोक लग गई थी । ऐसे में यह आम बात थी कि 'दुर्गापूजा' और 'कालीपूजा' के समारोह पर रोक लगेगा और वह हुआ भी, परंतु ओड़िशा के प्रथम राजधानी रह चुकी प्रमुख शहर कटक की कुछ मुख्य दुर्गापूजा कमेटियों के आंतरिक आवेदन के कारण ओड़िशा हाईकोर्ट ने परंपरा का मान रखते हुए कोविड की सभी दिशानिर्देशों को ध्यान में रखते हुए एवं सख्ती से पालन करते हुए 'दुर्गापूजा' मनाने की अनुमति प्रदान की । इस तरह दुर्गापूजा और विसर्जन उत्सव संपन्न हुआ । फिर कालीपूजा उत्सव एवं विसर्जन उत्सव भी उसी तरह हुआ । कार्तिक महीने में भी कोविड दिशानिर्देशों का पालन करते हुए सभी हिंदु धार्मिक स्थलों जैसे मठ एवं मंदिरों में देव–देवियों की धार्मिक रीति नीतियों का अनुपालन किया जा रहा था । कोई भी धार्मिक स्थल आम लोगों के लिए खुला नही था ।

इस तरह कार्तिक माह का विशेष दिन 'कार्तिक पूर्णिमा' भी आया, यह दिन सनातन धर्म के तीज–त्योहारों की प्रमुख दिनों में से एक हैं । इस दिन भक्त लोग प्रात: काल में उठ कर विभिन्न नदी और सरोवरों में स्नान करके विभिन्न मंदिरों में देवी–देवियों के दर्शन करके अपने आप को धन्य मानते हैं । परंतु इस बार कोरोना महामारी के चलते यह सबकुछ संभव नही था । कटक शहर में कार्तिक पूर्णिमा का एक विशेष महत्व है । इस शहर के एक ओर प्रवाहित हो रही महानदी के किनारे स्थित विराट मैदान में बालियात्रा नाम से एक प्रसिद्ध मेला लगता है, जो कार्तिक पूर्णिमा से शुरू हो कर दस दिनों तक चलता है । इस मेले का ऐतिहासिक महत्व भी है। ओड़िशा के इतिहास के अनुसार इस भूखंड का एक नाम कलिंग भी था और यह राज्य नौसेना और नौवाणिज्य या पोतपरिवहन के लिए विश्वप्रसिद्ध था । यहाँ की विभिन्न बंदरगाहों से वाणिक लोग जिन्हें 'साधव' कहा जाता है, कारोबार करने के लिए जाभा, सुमात्रा, बालि आदि विदेशी भूखंडों में जाते थे । उस स्वर्णिम अतीत को स्मरण करते हुए ओड़िशा के लोग कार्तिक पूर्णिमा के दिन सवेरे सवेरे अपने साथ रंग बिरंगी कागज से सजी हुई छोटी छोटी नावों को ले कर जाते है और पूजा के सामान के साथ उन्हें नदी या तालाबों में डालने के बाद मंदिरों में देवदर्शन करके घर लौटते हैं । यह प्रथा/परंपरा धार्मिक नीति का एक अनोखा मिश्रण है।

सुबह की इस 'डंगा भसा' (sailing boat) प्रथा के समापन के बाद बालियात्रा घूमने जाने का बेसब्री से इंतजार रहता था । 'बालियात्रा' शब्द का अर्थ बालि द्वीप के लिए जलयात्रा और महानदी के किनारे बालू या रेत पर होने वाला मेला भी है । कटक शहर वासियों के लिए 'बालियात्रा' एक आवेग का नाम है। इस मेले को देखने के लिए दस दिनों तक आस–पास के गांवों के साथ साथ राजधानी भुवनेश्वर से भी लोगों का तांता लग जाता है ।

शाम को कटक के विशेष ट्रैफिक नियम मानने पड़ते है । इस मेले में सैर सपाटा करने के लिए हर बच्चा अपना एक अलग गुल्लक रखता है । जिसे वह अपने माता पिता या फिर दोस्तों के साथ जाकर खाने–पीने में और अपना मनपंसद सामान खरीदने में खर्च करता है । हर वर्ग और हर उम्र के लोग इस मेले में शामिल होकर खुशी–खुशी घर लौटते हैं । लगभग एक सौ एकड़ जमीन पर यह मेला फैला हुआ होता है । घर गृहस्थी सारे साजोसामान की दुकानों के साथ साथ एक विशेष स्थान पर खाने पीने के स्टॉल्स होते हैं । यहाँ पर लोग रोल, चाउमीन, वेज–नॉनवेज खाने के साथ–साथ अक्सर बालियात्रा के प्रसिद्ध ठुंकापूरी और छेना तकीरी (थालीनुमा भटूरे और पनीर की स्पेशल सब्जी) और फूलगोभी की भाजी खाना नही भूलते, फिर अपने अपने पंसद की मिठाई जैसे मालपुए, रसगुल्ले खाते है और घर के लिए भी ले जाते है । बालियात्रा की स्पेशल बर्फ वाला पान खाकर जब सब अपने अपने घर को लौटते है ऐसा लगता है जैसे कोई जंग जीतकर जा रहे हो । सभी दोस्त अलग होते वक्त आपस में एक दूसरे को बोलते है ''सलामत रहे तो अगले साल फिर मिलेंगे'' । कार्तिक पूर्णिमा की सुबह कोरोना संबंधित नियमों का सख्ती से पालन करते हुए घर में रह कर यादों के झरोखों से यह सारे दृश्य देखते हुए मन में यह प्रार्थना कर रहे है, ''हे ईश्वर, सभी सलामत रहे और अगले वर्ष बालियात्रा देख सकें ।'' ●

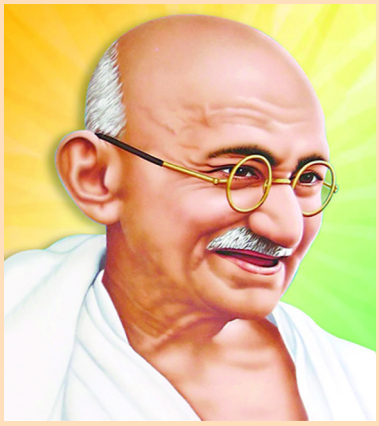

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्वक है ।

–महात्मा गांधी

सम्मान

श्रीमती मोनिका चौहान
कनिष्ठ अनुवादक

यह कहानी दास बेनहुर की अंग्रेजी में लिखी कहानी 'द ट्रिब्युट' का हिंदी अनुवाद है । दास बेनहुर एक ओड़िया लेखक है जो साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित है । इनका व्यक्तिव अत्यंत प्रभावशाली है । ये 'आमो ओड़िशा' के संस्थापक भी है । ये तो लेखक का परिचय था। आइए अब काहानी की ओर बढ़ते है ।

मैं कार्यालय की अपनी मेज के पास जैसे ही पहुँचा, मेरी नजरें सामने रखे एक पत्र पर जाकर रुक गई, जिसमें मेरे बड़े भइया की जानी पहचानी वही सुंदर लिखावट थी। बहुत ही लम्बें समय के बाद उन्होने मुझे पत्र लिखा है । मैं अंदर से थोड़ा सकुचा गया क्योंकि काफी समय से मैंनें अपने घर को कुछ नही लिखा ।

मेरे पढाई के दिनों में यह प्राय: एक दैनिक कार्य था। यात्रा के तनाव की ज़रा भी फिक्र किए बिना मैं एक जर्जर बस से अपने दूर स्थित गाँव में जाया करता था । मेरा घर – मेरा गाँव मुझे इस मृतप्राय शहरी जीवन से दूर अपनी ओर खींचते रहते थे पर अब चीजें बदल गई है और मैं भी बदल गया हूँ, उस पर यह एक बड़ा समझौता! ज़िंदगी के बहुत सारे जालों ने मुझे चारों ओर से घेर लिया है । मैं समय के अदृश्य ज्वार एवं व्यापार द्वारा बहा दिया गया हूँ । मैं भुवनेश्वर मे पढ़ रहा था, जहाँ मुझे मेरी नौकरी मिल गई और अब इन दो वर्षों में मैंनें अपने घर के बारे में एक बार भी नही सोचा । मेरी माँ ने मुझे बहुत बार पत्र लिखा जिसमें उन्होनें मेरे पत्र न लिखने के बारे में शिकायत की । यहाँ तक कि उन्होनें मुझे मेरी शादी के पहले के दिनों की याद भी दिलाई ।

अभी तक मैं मेरे चारों ओर कुंडलित शालीनता का गला तोड़ने में सक्षम नही हुआ हूँ । मैं यह सिद्ध करने के लिए चुप रहा कि मै बहुत व्यस्त एवं मशगूल हूँ । अब वह शिकायत नही करती है । शायद वह मेरी स्थिति समझती है ।

आमतौर पर मेरे बड़े भइया मुझे पत्र नही लिखते हैं। उन्हें मुझसे किसी चीज की जरूरत नही है । एक बड़े भाई होने के नाते उन्होनें कभी मुझसे मेरी चिंता के बदले में कोई टोकन नही मांगा । उन दिनों जब मैं विद्यार्थी था, वह मुझसे सिर्फ मेरी भलाई के बारे में पूछते थे । मेरे घर पर रुकने के दौरान वे हमारे घर के पीछे वाले तालाब से मेरे लिए मछलियाँ पकड़ कर लाते थे और भाभी से अच्छा भोजन बनाने को कहते थे क्योंकि मुझे मछलियाँ पंसद थी । जब मछलियाँ कम होती थी तब भोजन सिर्फ मेरे लिए ही बनता था । वे अपनी पत्नी से कहते, "सरसों की चटनी का प्रयोग करके तुम भोजन को जितना जायकेदार बना सकती हो तुम्हें बाबुली के लिए बनानी है ।" अब भी, वे प्यार के वही स्वर एक सहानुभूति वाले इंसान है । उन्हें कोई बदल नही पाया–उनके सात बच्चें, पिता, माता, पशु, खेत, घर की ज़िम्मेदारियां । वे मेरे वही बड़े भइया हैं । मैंनें पत्र को सावधानीपूर्वक पकड़ा । उन्होनें मुझे घर आने के लिए कहा था। कुछ झगड़ा हो गया है । दोनों भाभियों ने झगड़ा कर लिया था । हमारे फसलों वाले खेत, हमारी झोपड़ी एवं सभी चल और अचल संपत्ति को हमारे

बीच तीन हिस्सों में बाँटा जाना था ।

ये मेरे दूसरे भइया थे जो बँटवारें को लेकर बहुत व्यक्तिगत एवं अटल थे । वे इसे किसी भी कीमत पर चाहते थे ।

मैंनें पत्र पढना समाप्त किया । पसीने से मैं तरबतर हो गया । में असहाय, अनाथ सा महसूस कर रहा था। लम्बें समय के लिए निराशा मुझ पर हावी हो गई । बिल्कुल अथक रूप से मैंनें उन्हें दूर करने की कोशिश की व असहाय रूप से जम्हाईं लेते हुए कुर्सी पर बैठ गया ।

शाम को जब मैंनें होने वाले बँटवारे के बारे में अपनी पत्नी को बताया तो मानो उस पर कोई असर ही नही हुआ । उसने मुझसे सिर्फ पूछा – 'कब' ! जैसे वह इन सबके लिए तैयार थी और ये पल आने का इंतजार कर रही थी । "एक सप्ताह में" मैंनें कहा ।

उस रात बिस्तर पर मेरी पत्नी ने मुझसे हर प्रकार के प्रश्न पूछे । हमारा हिस्सा क्या होगा और इसे बेचने पर हमें कितने पैसे मिलेंगें ? कुछ समय के लिए मैं कुछ नही बोला किंतु उसे संतुष्ट करने के लिए अंत में अंदाज़ा लगाया कि लगभग बीस हजार रूपये रूपये मिलने चाहिए। वह मेरे पास आई और बोली, "हमें गाँव में किसी ज़मीन की आवश्यकता नही है । हम इसका क्या करेंगें ? इसे बेचकर हम पैसे ले लेंगें ।" याद रहे, जब तुम इसे बेचों तो पूरे बीस हज़ार रुपये मुझे सौंप देना । मैं इसका ठीक तरीके से उपयोग करूंगी । तुम्हें पता है, हमें फ्रिज़ की जरूरत है । गर्मी आ रही है । तुम्हें साइकिल चलाकर कार्यालय जाने की आवश्यकता नही है । तुम्हारे पास एक स्कूटर होना चाहिए और बचे हुए पैसे हम बैंक में डाल देगें । गांव में जमीन रखने का कोइ मतलब नहीं है । हम इसकी देखभाल नही कर सकते और दूसरे क्यों हमारी ज़मीन का लाभ उठाए ।

मैंनें यह सब ऐसे सुना जैसे एक मासूम मेमना अंधेरे में देखता है । मुझे ऐसा लगा जैसे कोई कसाई धुन गुनगुनाते हुए अपना चाकू पर धार लगा रहा हो और मुझे मांस के बड़े टुकड़ों में फाड़ने का इंतजार कर रहा हो और मुझे यह सांत्वना दे रहा हो कि मृत्यु के बाद एक अच्छी जिंदगी होगी ।

वो दिन चले गए; वो एहसास चले गए, जब 'घर' शब्द मेरे ह्रदय को भावना से भर देता था । और वह स्नेही शब्द 'भइया', क्या एहसास था उसमें ! कैसे यह शब्द मेरे ह्रदय को प्रेम से बंधित बनाता था । इन सारी चीजों को पुन: एकित्रत करते हुए, मुझे एक अजीब सी निराशा महसूस हुई ।

वो दिल कहाँ गया ? वो दिन कहाँ गए ? वो भावनाओं की सहजता कहाँ गई ? मैं यह बिल्कुल नही समझ सकता कि अचानक एक अजनबी नजदीक रखने के मूक वादे द्वारा सिर्फ जरा सी गर्मजोशी बाँटने से इतना करीब कैसे हो सकता है ।

लेकिन मैं दो दिनों में ही सामान्य हो गया । पहले जो मेरे लिए एक झटके की तरह था अब मैं भी उसका आदी हो गया । उसके बाद, बाजार में, अपनी पत्नी के साथ चलते चलते मैंने विभिन्न वस्तुओं के दाम के बारे में जानकारी हासिल की, जो वो खरीदना चाहती थी । फ्रिज खरीदना लगभग तय था । एक पुराना स्कूटर, एक स्टीरियो सेट और सोने के कुछ आभूषण । मैंनें कीमतों की एक सूची तैयार की । वो मुझे अपने इरादों की याद दिलाती रही और अपनी बेचैनी दिखाती रही ।

शनिवार की दोपहर थी । मैं अपने गाँव के लिए निकल पड़ा । वही बस थी, मुझमें वही पुराने जाने–पहचाने एहसास को जगा रही थी । मैं मेरी प्रिय सीट ड्राइवर के पीछे वाली पर बैठने के लिए जल्दी गया । जल्दबाज़ी में मेरा घुटना दरवाज़े से टकरा गया । मुझे चोट लग गई । सूटकेस गिर गया और भगवान लिंगराज के प्रसाद का पैकेट जो मेरी माँ के लिए था, ज़मीन पर

फैल गया । मुझे ऐसा लगा कि पूरी बस जोर से चिल्ला कर पूछ रही हो: "कितने वर्षों बाद? अपने घर के लिए तुम्हारे दिल में जो प्यार है उसे बरकरार रखने के लिए तुम बिल्कुल भी परेशान नही हुए। इसके बजाय तुमने अपने आप को शहरी बाबू बनाने के लिए इसे किसी कसाई को बेच दिया ! धिक्कार है तुम पर !"

सूटकेस और मिट्टी से सने पैकेट का सामान उठाकर, सफाई वाले और बस कंडक्टर के लिए एक शर्मनाक मुस्कुराहट लेकर मैं बस में बैठ गया ।

जब मैं बस से उतरा, शाम के पाँच बज चुके थे, मैंनें पहले ही पत्र भेज दिया था । मुझे लेने के लिए मेरे बड़े भइया बस स्टॉप पर पहले से ही थे । वे थोड़ा थके हुए और ग्लानिमय लग रहे थे । "सूटकेस मुझे दे दो, वह अवश्य ही भारी होगा ।" उन्होनें लगभग वह मुझसे छीन ही लिया । मैं उनके पैर छूना तक भूल गया । ऐसा पहले कभी नही हुआ था । वे मुझसे आगे चल रहे थे ।

हम गाँव की धूल से भरी हुई सड़क पर चल रहे थे जो हमेशा से ऐसे ही थी । मुझे अपने बचपन के दिनों की याद आ गई ।

बचपन में अकसर शाम को एक अध्यापक के पास जाने के लिए मुझे अकेले एक गली पार करनी पड़ती थी । जब मैं पढक़र लौटता था सामान्यत: देर और अंधेरा हो जाता था । अचूक रूप से मेरे बड़े भइया मुझे घर वापस ले जाने के लिए वहाँ होते थे अन्यथा मुझे डर लगता । उनके पास एक लालटेन, मेरी किताबों का बस्ता और नोट्स रहते थे । यदि मैं पिछड़ जाता तो वो पूछतें, "क्यों" ! शायद तुम थक गए हो । आओं, मेरा हाथ पकड़ लो और मेरे साथ चलो । सैर के लिए खेत जाते वक्त वो कभी-कभी मुझे अपने कंधों पर उठा लिया करते थे ।

बस स्टॉप गाँव से कुछ ही दूरी पर था । वे थोड़ा आगे निकल गए । वे रुके और वही पुराना सवाल पूछा जो वो पूछा करते थे । मैं कुछ बोल न सका ।

अतीत मेरे अंदर अंकुरित हो रहा था । बचपने के दिन और अब के दिन । समय मेरे लिए रुक गया है । मैं बदल चुका हूँ । लेकिन मेरे बड़े भइया ! समय उन पर कोई बदलाव नही ला सका । उन पुराने दिनों की तरह ही वे मेरा बैग लिए हुए अब भी मेरे आगे चल रहे थे । मैं अपने आप में तुच्छ महसूस कर रहा था । हिचकिचाते हुए मैंनें कहा, "भइया ! वो सूटकेस मुझे दे दीजिए । कुछ समय के लिए मुझे उठाने दीजिए ।" "तुम चिंता मत करो।" उन्होनें कहा, "यह भारी है और तुम थके हुए हो। हमें थोड़ा और तेज चलना चाहिए । तुम्हें भूख लगी होगी। ये शाम के खाने का वक्त है ।" मैं चुपचाप उनके पीछे चलता रहा ।

हम घर पहुँच गए । अंधेरा हो चुका था, पवित्र तुलसी के पौधे के सामने दीप जलाने का वक्त था । उन दिनों की तरह मेरे कोई भी भतीजे "चाचा, चाचा" चिल्लाते हुए मेरे पास नही आए । मेरी भाभी मुझे मिलने के लिए रसोईघर से दौड़कर नही आई । सब कुछ बिल्कुल शांत था । सिर्फ मेरी माँ आईं और मेरे पास खड़ी हो गई । दूसरे भइया और उनकी पत्नी कही दिखाई नही दे रहे थे । पूरे घर में एक अजीब सी शांति थी या यों कहे कि कब्रिस्तान जैसा सन्नाटा पसरा था । मानो घर अपने सम्पूर्ण पतन की तैयारी कर रहा हो ।

मैंनें सबके साथ सामान्य रहने की कोशिश की । परंतु वहाँ चारों तरफ एक अजीब सी शांति थी । मेरे दूसरे भइया और उनकी पत्नी ने घर में होने के बावजूद भी कोई प्रतिक्रिया नही दिखाई । वे सब सिर्फ बँटवारे को तैयार थे । और उन्हें किसी की परवाह नही थी । मैं सारी रात सो नही सका और अगली सुबह बिल्कुल नीरस तरीके से बीत गई ।

मध्याह्न का समय था । बँटवारे के पर्यवेक्षण के लिए सात या आठ लोग आँगन में एकित्रत हो चुके थे । हम तीनों भाई उपस्थित थे । माँ आस-पास कहीं भी दिखाई नही दे रही थी ।

हम सब अंतिम अलगाव का ऐसे इंतजार कर रहे थे, जैसे कोई शरीर रूपी घर से मांस के टुकड़े को काटकर बाँट रहा हो, वो शरीर जिसे हमारे माता-पिता ने अपनी शादी के दिन से सहेज कर रखा था और पाल-पोष कर बड़ा किया था । उसके बाद हम तीनों अलग-अलग दिशाओं में एक-एक टुकड़े पर कब्जा कर लेंगें ।

घर के आँगन में सारे सामान का ढेऱ लगा हुआ था। ये सब तीन भागों में बाँटे जाने थे – घर की सभी छोटी चीजें, लगभग सभी चल संपत्ति, नारियल के खोल से बने चमचे से लेकर उस छोटे बक्से तक जिसमें पिताजी अपने पान रखा करते थे ।

कुल्हाड़ी और पुराने रेडियो सेट को भी वहाँ रखा गया । सभी वस्तुओं की एक लम्बी सूची तैयार की गई थी। कुछ भी नही छूटा था, न ही धिनकी (चावल कूटने वाली लकड़ी) न ही पैतृक छोटे आकार वाली मूर्तियाँ ।

मैंनें अपने बड़े भइया को उठते हुए देखा । वे सामान के ढेऱ के पास एक क्षण के लिए रुके और अपनी कलाई की घड़ी के पट्टे को खोला और इसे अन्य सामान के साथ ढेऱ पर रख दिया । शायद उनके गाल पर एक आंसू टपक गया । गहरी सांस के साथ वे उस स्थान से हट गए ।

मैंनें उन्हें अकसर यह कहते हुए सुना था कि पिताजी उनके लिए वह घड़ी तब लाए थे जब वे ग्यारहवीं कक्षा में थे किंतु मुझे यह भी अच्छे से याद है कि मेरे एम.ए. अंतिम वर्ष में, एक साक्षात्कार हेतु दिल्ली जाने के लिए उन्होनें मुझे पैसे भेजने के लिए उस घड़ी को गिरवी रख दिया था । मुझे अच्छी तरह से याद है कि उन्होनें मुझ एक सौ पचास रुपये भेजे थे । कोई नही जानता कि उनके पास घड़ी कैसे वापस आई । उनकी प्रतिक्रिया अतीत के साथ उनके जुड़ाव का प्रतीक लग रही थी ।

मै मौन था । मेरी बड़ी भाभी पीछे वाले आंगन में थीं । मेरा दूसरा भाई प्राय: अपनी पत्नी के कान में कुछ खुसफुसा रहा था और अपना हिस्सा लेने के लिए हमारे साथ था । ये ऐसा था जैसे एक कसाई की चाकू खुद को धारदार करने के लिए पत्थर के पास जा रही हो । बड़े भइया बिल्कुल शांतचित्त थे । एक कुशल सज्जन की भांति वे कार्यवाही को शांतिपूर्वक ऐसे देख रहे थे जैसे वे अपने पुत्र के पवित्र जनेऊ संस्कार के दिन और मेरी शादी के दिन देख रहे थे । वे बिल्कुल पहले जैसे और गंभीर तरीके से अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे थे । मेरे दूसरे भाई से बात करते समय भी उनकी आवाज़ धैर्यपूर्ण एवं शांत थी । अविश्वास और खेद जैसी कोई भी चीज़ उनकी आवाज़ में नही थी ।

मुझे याद है, जब पिताजी की मृत्यु हुई थी, हमें बहुत ही आर्थिक तंगी में जीवन बिताना पड़ा था । सर्दी का समय था । ठंड अपने चरम पर थी । हमारे पास सीमित कंबल थे । सर्दी हमें काट रही थी विशेषत: आधी रात के वक्त, वो एक कंबल किसी के लिए पर्याप्त नही थे ।

उस रात मैं गलियारे वाले कमरें में सो रहा था । जब मैं सुबह उठा, मुझे मेरे भइया का कंबल मेरे ऊपर मेरे कंबल के साथ मिला । प्रात: जल्दी वो बिना अपने कंबल के खेत के लिए निकल गए । अगर उनसे पूछा जाता क्यों, निश्चित ही वे हमेशा की तरह कहते कि उन्हें ठंड नही लगती। अब मेरे पास अच्छी आय है । तब भी मुझे मेरे भइया के लिए कोई गर्म कपड़े खरीदने का विचार कभी नही आया । वे उस फटे कंबल के साथ संतुष्ट और खुश है, जिससे उन्होनें मुझे दोहरा ढक्का था । वही कंबल सारे सामान के साथ मेरे सामने था ।

मै ठंड और कृतघ्नता से कांप गया । बटवारें की प्रक्रिया समाप्त हो चुकी थी । मेरे दूसरे भइया ने जो भी मांग की, मेरे बड़े भइया ने उसे हँसते हुए सहमति प्रदान कर दी ।

मेरे दूसरे भइया ने जमीन के उस टुकड़े को खरीदने का प्रस्ताव रखा, जो मुझे दिया गया था और मूल्य के रूप में अठ्ठारह हजार रुपये का प्रस्ताव दिया ।

शाम को, मेरे बड़े भइया मुझे अपने साथ मेरे धान के खेत दिखाने ले गए । मैं चुपचाप उनके पीछे चलता रहा । हम मेड़ से मेड़ तक घूमे । हर जगह, मुझे उनके कदमों, उनकी हथेलियों और उनकी अंगुलियों के निशान महसूस हो रहे थे । उन धान के खेतों की छाती पर मेरे बड़े भइया के पसीने के मोती बिखरे थे । वे मुझे ऐसे खेत दिखा रहे थे जैसे एक पिता किसी अजनबी को परिवार के सदस्यों से मिलवा रहे हो ।

सुबह मुझे भुवनेश्वर के लिए निकलना था । मेरे अंदर अपने बड़े भइया से मिलने का साहस नही था । बस स्टॉप के लिए निकलने से पहले मैंने वही कागज का टुकड़ा अपनी बड़ी भाभी को थमा दिया, जिसमें मेरे हिस्सें का विवरण लिखा था । उसके पीछे कुछ लिखकर, उन्हें मेरे बड़े भइया तक पहुँचाने को कहा और चुपचाप घर से बाहर चला आया । मैंनें लिखा था :

भइया,

मैं ज़मीन का क्या करूंगा ? आप मेरी ज़मीन हो जहाँ मैं जीवन की हर चीज उगा सकता हूँ । आपके सिवा मुझे किसी भी चीज़ की जरूरत नही है । कृपया इसे स्वीकार करें । यदि आपने मना किया तो मैं आपको अपना चेहरा कभी नही दिखाऊंगा ।

आशा है आपको काहानी के साथ साथ अनुवाद भी अच्छा लगा होगा । यदि अनुवाद के संबंधित कोई सुझाव हो तो ई–मेल : monikac.odi.au@cag.gov. in पर प्रेषित करे । ●

भारतीय भाषाएं नदिया हैं और हिंदी महानदी ।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

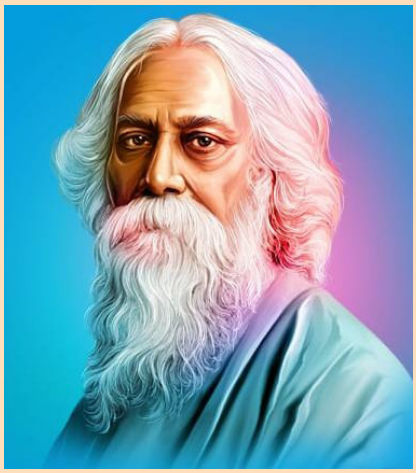

मेरा भारत महान

श्री रितुध्वज
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हममें से बहुत से लोग महान भारत में रहते हैं और बहुत सब लोग रहते हैं द ग्रेट इंडिया में। समझ तो आप गए ही होंगे कि बात हो रही है दुनिया में सबसे ज्यादा अरबपतियों की संख्या में तीसरे पायदान पर मौजूद इंडिया की और आज भी गरीबी बेरोजगारी टूटी सड़कों और साफ पानी को तरसते भारत की। मीडिया के कैमरे अरबपतियों के घरों का पता तो जानते हैं और उन्हीं की फोटो और कहानियां आपको अखबारों के मुखपृष्ठ पर या फिर पेज तीन पर मिल जाएंगे लेकिन गरीब की कुटिया दीवारें लगाकर ढ़क दी जाती है और उसी अखबार को बेचकर दिन की शुरुआत करते हैं जाने कितने गरीब लोग। ऐसी गरीबी की मास्टर डिग्री लेकर भी 10 या 15000 की नौकरी के लिए धक्के खाता फिर रहा है देश का युवा। देश में कोई भी आपदा आए या फिर आर्थिक संकट या फिर कोई महामारी, असली असर गरीबों पर ही पड़ता है जिनका हाल पूछने वाला कोई नहीं । और इससे भी बड़ा मजाक यह है कि गांव में 1 दिन के 27 रू और शहर में 35 रू से अधिक कमाने वाला व्यक्ति गरीब नहीं है। सुरेश तेंदुलकर कमिटी की रिपोर्ट के मुताबिक सन 2011 में 21.9% जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे थी मतलब देश का हर पांचवा नागरिक दिन के 27 रू यह 35 रू नहीं कमा पाता था। यह कैसी गरीबी है जो सालों की परियोजनाओं और हजारों करोड़ के खर्च के बाद भी खत्म नहीं होती। आखिर हमसे गलती कहां हुई है ? इस गरीबी और बेरोजगारी का कारण क्या है ? आइए कुछ कारणों पर नजर डालते हैं।

शिक्षा का स्तर

सन 1835 में थॉमस बेबिंगटोन मैकाले ने भारत की पूरी शिक्षा पद्धति बदल डाली। भारतीय साहित्य के बारे में इन महाशय की सोच कुछ ऐसी थी कि भारत का संपूर्ण साहित्य लंदन की एक लाइब्रेरी के किसी एक अलमारी में रखी किताबों के समतुल्य भी नहीं हैं। एक बहुचर्चित स्पीच जो कहा जाता है कि लॉर्ड मैकाले ने दो फरवरी 1835 को अंग्रेजी पार्लियामेंट में दी थी के अनुसार उन्होंने कहा था कि मैंने भारत में सभी जगह विचरण कर लिया है लेकिन मैंने भारत में एक भी भिखारी नहीं देखा एक भी चोर नहीं देखा जिस प्रकार की संपत्ति और संपदा इस देश में मैंने देखी है, जिस प्रकार के उच्च नैतिक मूल्य, ऐसे क्षमतावान लोग कि मुझे नहीं लगता कि हम इस देश को तब तक पूरी तरह से कब्जा पाएंगे, जब तक कि हमें देश की रीढ़ की हड्डी (धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत) तोड़ दें। इसीलिए मैं पेश करता हूँ इनके पुराने अति प्राचीन एजुकेशन सिस्टम की जगह इंग्लिश एजुकेशन सिस्टम जिसे कि यह लोग खुद सोचेंगे जो भी विदेशी और इंग्लिश है, वह अच्छा है और इनके खुद के पास जो कुछ है उससे बेहतर है। ये अपना स्वाभिमान खो देंगे, अपनी प्राचीन संस्कृति को खो देंगे। फिर ये लोग बनकर निकलेंगे ऐसे स्नातक जो बाहर से भारतीय होंगे और अंदर से अंग्रेजी क्लर्क।

2019 के स्किल इंडिया रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में हर साल इंजीनियरिंग डिग्री लेने वाले लोगों में से

केवल 57 % ही रोजगार प्राप्त करने के लायक हैं और तो और हर साल इंजीनियरिंग पास करने वाले छात्रों में से 60 % ऐसी नौकरी में जा लगते हैं जिसमें इंजीनियरिंग डिग्री की जरूरत ही नहीं है। जिन्हें अपनी पढाई की हुई डिग्री के अनुसार नौकरी मिलती भी है उन्हें नौकरी देने वाले बोलते हैं कि यह लोग हमारे पास काम करने लायक नहीं है। दरअसल कॉलेज में जो पढाया जा रहा है और जो बाजार को चाहिए उसमें बहुत बड़ा अंतर है अब कॉलेज में पढाया जाने वाला पाठ्यक्रम तो सरकार ही तय करती है, तो आजादी के 74 सालों में हम अब तक भी अपने एजुकेशन सिस्टम की मरम्मत क्यों नहीं कर पाए हैं?

भ्रष्टाचार

देश के करदाताओं का जो पैसा देश के विकास में खर्च होना चाहिए अगर वही पैसा राजनीतिज्ञों और सरकारी नौकरों की जेब में चला जाएगा तो विकास होगा कैसे? देश के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी ने खुद कहा था कि 100 रू में से आम आदमी तक केवल 1 रू ही पहुंचता है तब से अब तक और भी अधिक बिगड़ते हालात को देख कर तो लगता है कि वह 1 रू भी नहीं पहुंच रहा है। पहली ही बारिश में टूटती हुई सड़कें, रास्ते में गिरते हुए पुल, बार–बार मरम्मत मांगते सरकारी निर्माण किए गये सभी भवन इस बात का गवाह है कि भ्रष्टाचार का स्तर पहले से और भी ज्यादा ऊपर जा चुका है।

आय व संपत्ति का असमान वितरण

अगर देखा जाए तो जिसने अधिक मेहनत की है, सही समय पर सही निवेश किया है (संपत्ति में शेयर बाजार में या फिर शिक्षा में या अपने उत्थान के लिए किसी भी क्षेत्र में) उसे कम मेहनती व्यक्ति के मुकाबले अच्छा प्रतिफल मिलना ही चाहिए। लेकिन इतना बड़ा फासला? देश का 57 % धन 10 % लोगों के पास और सबसे नीचे के तबके से उम्मीद की जाती है कि 27 रू में दिन का खर्च चलाएं। एक तरफ अमीरों के पास चार व्यक्तियों के परिवार के लिए एकड़ में फैले बंगले हैं दूसरी तरफ गरीब के 10 लोगों का परिवार एक ही कमरे में सो रहा है अब तर्क यह दिया जाएगा कि गरीब ने परिवार इतना बड़ा ही क्यों किया। बिल्कुल सही बात है लेकिन एक गरीब जो अशिक्षति है क्या पता उसकी मानसिकता यह हो कि जितने ज्यादा लोग होंगे उतने ज्यादा कमाने वाले होंगे और हमारी गरीबी मिट जाएगी। आखिर ज्यादा मेहनत करके कम पैसे कौन कमाना चाहता है? हर कोई चाहता है की घर की आमदनी बढ़े ।

आरक्षण

जिस समय संविधान निर्माताओं ने संविधान में आरक्षण की व्यवस्था की थी, वह केवल आगामी 10 वर्षों के लिए थी। आने वाली सरकारों को देश के सभी जाति, धर्म, सभी जनजातियों को अवसर की समानता प्रदान करके, एक स्तर पर लाकर समय के अनुसार आरक्षण की नीति को खत्म कर देना चाहिए था। पहली बात तो सरकारे देश को विकास की सही दिशा में ले जाने में ही असफल रहीं, दूसरे आरक्षण राजनीतिक रोटियां सेकने का एक जरिया बन गया। संविधान लागू होने के 70 साल बाद आज भी आरक्षण इस देश में कायम है। और तो और जातियां संघर्ष करती हैं आरक्षण पाने के लिए। बाकी सब क्षेत्रों में तो ठीक, किन्तु देखा जाए तो इंजीनियरिंग और चिकित्सा के क्षेत्र में भी आरक्षण प्रदान किया जाता है देश में । आप खुद ही समझें इस बात को आरक्षण लेकर डॉ बनने वाला एक व्यक्ति भला कैसा ही इलाज करेगा और क्या ही रिसर्च करेगा आने वाले समय में। मुझे लगता है कि शिक्षा में से निजी संस्थानों को पूर्णतया निकाल देना चाहिए और पूरे देश को एक ही दर पर एक सी शिक्षा मिले। जब हर एक व्यक्ति एक ही स्तर की पढाई करके आया होगा तो नौकरियों में अंकों के

आरक्षण की व्यवस्था तो हम डंके की चोट पर खत्म कर सकेंगे।

गंदी राजनीति

एक चपरासी की नौकरी के लिए भी इस देश में न्यूनतम अर्हता निर्धारित होती हैं लेकिन इस देश में जनसाधारण का नेता बनने के लिए आपको कोई न्यूनतम शैक्षिक अर्हता नहीं चाहिए। आप अनपढ. हैं, आप पर जितने भी न्यायिक मुकदमे चल रहे हो आप चुनाव लड़ सकते हैं। जीत गए तो जाकर संसद में बैठ सकते हैं और विधि निर्माण में आपका योगदान होगा। जब शिक्षा मंत्री ही शिक्षित नहीं होगा तो क्या ही होगा उस देश की शिक्षा का भविष्य। शायद यही कारण है कि अक्सर सिविल सेवा परीक्षा जैसी कठिन परीक्षा पास करके आए अधिकारियों से राजनेताओं द्वारा अपने जूते साफ करवाने के किस्से तक सुने हैं इस देश ने।

कुल मिलाकर देश की सरकारें पूरी तरह असफल रही हैं वो करने में जो करने के लिए उन्हें हमने चुना। पर सोचने वाली बात ये भी है की क्या देश का नागरिक एक अच्छा नागरिक बन पाया? क्योंकि सरकार में शामिल लोग भी तो नागरिकों से ही निकल कर गए हैं। समस्याएं बहुत सारी हैं और हमें आदत पड़ चुकी है जिम्मेदारी एक दूसरे पर थोपने की। जरूरत है शांति से सोचने की, हर किसी को कम से कम अपने स्तर पर कुछ बेहतर करने की। ●

जय हिन्द।

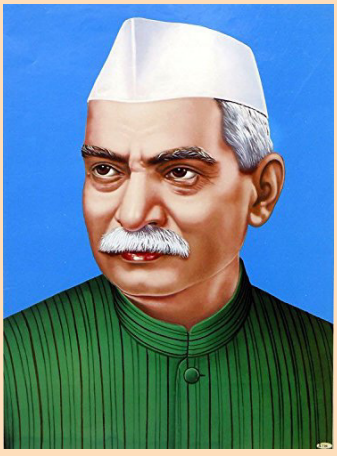

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

धनु यात्रा- विश्व का सबसे बड़ा मुक्ताकाश रंगमंच

श्री अमित कुमार प्रधान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ओड़िशा के बरगढ़ जिला में विश्व प्रसिद्ध धनु यात्रा का आयोजन जनवरी के महीने में 11 दिन तक होता है। इस यात्रा को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में सबसे बड़ा मुक्ताकाश रंगमंच (ओपेन) की मान्यता मिली हुई है क्योंकि धनु यात्रा के दौरान पूरा शहर रंगमंच में तब्दील हो जाता है । यह यात्रा विश्व स्तर में पहचान बना चुकी है।

इस धनुयात्रा उत्सव के दौरान वरगढ.शहर राजा कंस की राजधानी मथुरा नगरी में तब्दील हो जाता है जबकि पास ही जीरा नदी के पार का अम्बपाली गाँव भगवान कृष्ण का धाम गोप पुरा बन जाता है । दोनों शहरो के बीच बहने वाली जीरा नदी यमुना नदी का प्रतीक होता है।

धनुयात्रा को विश्व का सबसे बड़ा खुला थिएटर माना जाता है । शहर की लगभग पूरी आबादी बरगढ़ के इस उत्सव का हिस्सा बनती है । यह खुले थिएटरों का एक समूह है जिसमें अलग-अलग जगहों पर एक साथ कई तरह के कार्यक्रम चलते रहते है । अभिनेता और दर्शक दोनों ही एक नाटक खत्म होने के बाद दूसरा नाटक करने और देखने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाते रहते है । नाटक का केंद्रीय विषय भगवान कृष्ण द्वारा अत्याचारी राजा कंस को मारने की सदियों पुरानी कहानी होता है ।

धनुयात्रा के दौरान कंस महाराज की ही चलती है। यह मंत्री, संतरी, डीएम, एसपी सभी कंस महाराज के दरबार में हाजिरी लगाते है । आड़िशा के मुख्यमंत्री रहे बीजू पटनायक को भी कंस महाराज एक बार सजा सुना चुके है । यात्रा के दौरान कंस महाराज शहर में घूम-घूम कर विकास कार्य का जायजा लेते हैं । गलती देखकर फटकार लगाना तथा अच्छा कार्य देखकर पुरस्कार देना उनके शासन का अहम कार्य है ।

बरगढ़ की जनता भी महाराज को भरपूर सम्मान देती है । उनके हर आदेश का पूरी तरह पालन होता है । इस दौरान कंस महाराज का दरबार भी आयोजित होता है। जनता अपनी समस्याएँ लेकर पहुँचती है । बिजली, पानी, सड़क व स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएँ जनता महाराज के समक्ष रखती है । महाराज कंस फरमान जारी कर संबंधित अधिकारी को दरबार में हाजिर होने के लिए कहते है और उन्हें महाराज कंस की फटकार भी सुननी पड़ती है । प्रजा धनु यात्रा के दौरान भले ही कंस महाराज को हीरो की तरह मानती है, मगर उनका अंत भगवान श्रीकृष्ण के हाथों होता है । कंस वध के साथ धनु यात्रा का समापन होता है । ●

ऑनलाइन कक्षा और बच्चे

श्री आशीष रंजन
निजी सचिव/महालेखाकार

शिक्षा ही है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में कई सफलताएं हासिल कर सकता है । शिक्षा व्यक्ति के समुदाय और समृद्धि के लिए योगदान का कार्य करती है। कोविड–19 के कारण आज देशभर के लगभग सभी स्कूल, कॉलेज और अन्य सभी शिक्षण संस्थान बंद है । विद्यार्थी वर्ग अपनी क्लास अटैंड नही कर पा रहे है । परिणामस्वरूप, शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन देखने को मिलें हैं । आज ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन देखने को मिले है । आज ऑनलाइन शिक्षा को ज्यादा तरजीह दी जा रही है और शिक्षा का रूप डिजिटल हो गया है ।

एक अनुमान के मुताबिक ऑनलाइन शिक्षा की अवधि को कम किया है और सूचना को अधिक बढाया है । लॉकडाउन खुलने के बावजूद भी बच्चों की सुरक्षा को देखते हुए शिक्षण संस्थान बंद ही चल रहे है ।

ऑनलाइन शिक्षा से बच्चों में अधिक खुशी देखने को मिलती है । आज ऑनलाइन शिक्षा ने एजुकेशन के नए–नए रास्ते खोल दिए है, जो कि भविष्य में अधिक विकसित होने के आसार है । अब विद्यालय के दिशा–निर्देशों के अनुसार शिक्षक बच्चों को घर से ही ऑनलाइन पढा रहे है, ताकि शिक्षा में किसी प्रकार की रुकावट न हो ।

ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा का एक ऐसा माध्यम बन गया है, जिसके माध्यम से बच्चे घर में रहकर भी अपने अध्यापक से इंटरनेट स्काइप, व्हाट्सएप, गूगल मीट और ज़ूम वीडियो कॉल के माध्यम से बच्चों को आसानी से पढ़ सकते है । ई–लर्निंग डिस्टेंट शिक्षा का एक ऐसा रूप है जहाँ बच्चे और शिक्षक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के जरिए एक दूसरे से जुड़कर पढ़ाई का कार्य करते है । ऑनलाइन एजुकेशन होने से समय की बचत होती है । कई बार बच्चों को विद्यालय आने–जाने में थकान का अनुभव होने के कारण वे एकाग्र होकर पढाई नही कर पाते । जिससे वे खेलने, डांस करने एवं अन्य गतिविधियाँ नही कर पाते है । ऑनलाइन शिक्षा से समय एवं ऊर्जा दोनों की बचत होती है । ऑनलाइन शिक्षा से बच्चे नई टेक्नोलॉजी से रूबरू हो रहे है एवं उसे सीख रहे है । ऑनलाइन एजुकेशन होने से बच्चों को ट्रांसपोर्ट में होने वाले खर्चे में कमी आ रही है और साथ ही साथ सड़कों पर होने वाली दुर्घटना से भी बच रहे है । इंटरनेट पर उपलब्ध नोट्स और डाटा ऑनलाइन होने के कारण कागज की बचत के साथ–साथ ट्यूशन की भी फीस बच रही है । ऑनलाइन स्क्रीन शेयरिंग का उपयोग करके विषयों को समझना आसान हो गया है । ऑनलाइन व्हाइटबोर्ड का उपयोग, फाइल, लिंक और वीडियो भेजने के कारण शिक्षक अपनी रचनात्मक शिक्षा को विद्यार्थियों तक पहुँचा सकता है। इसमें शिक्षक को विभिन्न प्रकार से बच्चों को पढ़ाने का भरपूर मौका मिलता है ।

किसी भी स्थान से और किसी भी समय पर ऑनलाइन पढ़ाई की जा सकती है । आपको केवल एक उपकरण जैसे कंप्यूटर और इंटरनेट कनेक्शन की जरूरत होती है। साथ ही साथ इसमे शिक्षक जब चाहे तब क्लास रख सकता है और स्थगित भी कर सकता है । अत: ऑनलाइन शिक्षा एक उत्कृष्ट शिक्षा का उदाहरण है। ●

मेरा गाँव

श्री सतीश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

घर बार छोड़कर निकले थे, शहरों में कमाने
अपनों से मिले हो गए अब तो कई जमाने
पैसों के चक्कर में घर ना आने का करते रहा बहाने
सोचा था कमा करके भर लूंगा अब अपने खजाने
शहरों के चकाचौंध में सपनों को था लगा सजाने
पैसों से अपनी किस्मत को चला था अब सुलझाने
गाँव की खेती बारी को छोड़ लगा था अब इठलाने
आंखों में चश्मा, पैर में जूते हीरो जैसे थे अब अफसाने
गांव में अब जाने से भी लगा था मैं कतराने
सब कुछ सही चल रहा था, तभी विपदा आई डराने
टूट चुका था विपदा से लड़ते–लड़ते, कोई न था पास सिरहाने
मुश्किल की घड़ी में यहां कोई न आया बचाने
एक कमरे के घर में अब लगा था मैं अकुलाने
पूरा गाँव जहाँ अपना घर था, छत थी आसमानें
गाँव छोड़कर शहरों में लगा हूँ मैं पछताने
गाँव में चाहे कम थे पैसे पर दोस्तों के थे खजाने
शहरों के इस भीड़–भाड़ में हम बने फिरते अनजाने
दो वक्त की रोटी को भी तरस रहे अब, गाँव में होती थी खादानें
पानी को भी कोई पूछ न रहा, घर की याद लगी है सताने
गाँव में अपनी भी इज्जत थी खुशियों के न थे पैमाने
हर सुख–दुख में सब साथ खड़े थे, याद है सब एहसानें,
नही आऊंगा शहरों में अब अपनी इज्जत गंवानें
अब मर जाऊंगा पर शहरों में नही आऊंगा कमाने । ●

मौन

श्री शैलेन्द्र कुमार
वरिष्ठ अनुवादक
मोबाइल : 9471111919

नीचे प्रस्तुत रचना अरूण जेठवानी द्वारा लिखित एक अंग्रेजी लेख "Seer Who Spoke With The Help Of Silence" के अनुवाद की कोशिश है। उम्मीद है इस लेख के साथ साथ अनुवाद भी आपको पसंद आएगा। मौन के महत्व विषय पर इससे बेहतर शायद कोई संक्षिप्त लेख मुझे न मिल सकता था। 14 नवंबर, 2008 को भागलपुर के एक कबाड़ी दुकान से खरीदी इस पुस्तक The Best Of Speaking Tree by Times Group से इस लेख को निकालकर अनुवाद आपके सामने परोस रहा हूँ:–

लोग उन्हे अवतार मेहेर बाबा कहते थें। पहाड़ी की ओर जाने वाली सड़क के दोनो किनारों पर कैकटस के पौधे थें एवं आखिर में सुदूर अवतार मेहेर बाबा का कालखंड के साथ शांत एवं आवेगहीन पड़ी उनकी समाधि थी। 1927 में इस सुदूर खड़े मकबरे में बाबा निवास करते थें। उन्होने अपने भक्तों से कहा था: जहां कहीं भी मैं अपने शरीर को त्यागूं, मेरे शरीर को यहां ले आना। मकबरे को पूरे 30 साल लगें जब वह बाबा के शरीर का आलिंगन कर पाया।

31 जनवरी, 1969 को मेहेर बाबा का देहावसान हुआ। 25 फरवरी, 1894 को जन्में मेहेर बाबा पारसी थें। इतिहास का यह कालखंड बहुत सारे उत्तम कोटी के गुरूओं का समय था जिसमें सिरडी के साईं बाबा, उपासनी महाराज तथा हजरत बाबा जान प्रमुख हैं। मेहेर बाबा के प्रथम गुरू एक मुस्लिम युवती पीर बाबा जान थीं । मीरा की तरह बाबा जान ने भी आध्यात्म का रास्ता चुना था। वह पुणे पहुंचे और एक वृक्ष के नीचे जाकर अपना डेरा जमा लिया। मेहेर जब स्कूल जाया करते तो उसी रास्ते से गुजरा करते थें। 12 वर्ष की उम्र में एक बार जब वे उस रास्ते से गुजर रहे थें तो बाबा जान नें उनके माथे को चूमा और भौतिक जीवन के माया कि पहली परत को हटाते हुए मेहेर को एक दैविक अनुभूति का एहसास करवाया।

बाबा का सबसे मुख्य गुण उनका मौन होना था वे पिछले 44 वर्ष से मौन के सरोवर में डूबे हुए थें। 10 जुलाई, 1925 को उन्होने मौन धारण किया था और 1969 में अपने देहावसान के वक्त तक मौन में ही रहे। आरंभ में वे कागज–कलम का उपयोग कर संवाद किया करते थें तदोपरांत वे हाव भाव से संवाद करने लगे और फिर धीरे धीरे उन्होने हर तरह के संवाद को खत्म कर दिया। महात्मा गांधी उनके इस गुण से इतने प्रभावित हो गए कि उन्होने सप्ताह में एक दिवस का मौन व्रत धारण करना आरंभ कर दिया। बाबा ने कहा ईश्वर बोलते नही फिर भी वे सबों से संवाद करते हैं। संवाद के लिए शब्दों पर निर्भरता आवश्यक नही होती। यह भावना ही होती है जो स्पंदन द्वारा दूसरों तक बिना कोई शब्द कहे पहुंच जाती है। बोली से ज्यादा मौन शक्तिशाली होती है। यह वाक्य उनके मकबरे के बाहर खुदा हुआ है– वास्तविक चीजों का लेन देन मौन में ही होता है। 'Things that are real are given and taken in silence".

मौन के प्रति बाबा की स्वीकार्यता ऐसी लाजवाब

है कि जब 1952 में अमेरिका में तथा 1956 में भारत में उनकी सड़क दुर्घटना हुई जिसमें उनके शरीर की कई हड्डियाँ टूटी फिर भी इतने दर्द के बावजूद भी उन्होने अपना मौन नही तोड़ा। वे किसी से मिले भी नही। वे अपने "प्रेम शक्ति" से मानव कल्याण के लिए कार्य करते रहें। बाबा ने कहा मैं कोई शिक्षा देने नही बल्की जागृत करने आया हूँ। चूंकि ईश्वर द्वारा पूर्व में बनाए गए सिद्धांतो के लिए मनुष्य बहरा हो गया है इसलिए मैने मौन धारण कर लिया है। तुमने बहुत सारे शब्दों का लेन देन किया है अब इन शब्दों को जीने का वक्त है... जब मैं अपना मौन तोडूंगा तो मेरे प्रेम का प्रभाव वैश्विक होगा एवं सृष्टी के सभी जीव इसे जान पाएंगें, महसूस भी कर पाएंगे एवं इसे प्राप्त भी करेंगें। मेरे मौन का टूटना तुम्हे खुद को समझने में मदद करेगा। जब ह्रदय अलग हो तो संवाद के लिए शब्दों की जरूरत होती है परंतु जब ह्रदय साथ हो या एक हो तो कोई शब्द की आवश्यकता नही होती। उनका कहना था कि शब्द तो भेद व दूरियां पैदा करता है। मौन अपने विशुद्ध रुप में मनुष्य का 'आत्म' है। यह स्वयं में ईश्वर की अनुभूति है, मौन ही ध्यान है एवं मौन ही ऊर्जा है। बिना शब्दों के, बिना विचारों के मौन आपके सवालों का जवाब ढूढ़ने में एवं आपको आपकी मंजिल का रास्ता बतानें में मदद करता है। ●

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है ।

– स्वामी दयानंद

लॉकडाउन

श्री अखिल जेना
पर्यवेक्षक

उस दिन बैजयंती रो नही रही थी, सिर्फ दोनों आँखों से आंसू टपक रहे थे । रोने से शायद उसके छोटे-छोटे बच्चे देख लेंगे, इसलिए अपने अंदर के दुख को उसने दिल में समेट लिया था । बहुत ही सावधानी से उनसे आंसुओं को पोछा, मानो आँखों में कुछ गिर गया हो। उसके लिए कोरोना और लॉकडाउन दुख का पहाड़ लेकर आए थे । सर से पांव तक सिर्फ भावना की यातना । उसके इकलौते भाई की शादी हो रही है । उसे पता है शादी का मौका बहुत खास होता है । शादी जिंदगी में सिर्फ एक बार होती है । उसे अपने भाई-भाभी को दूल्हा-दुल्हन के रूप में देखने का सौभाग्य नही मिलेगा । इसलिए उसकी आँखों में आंसू हैं ।

जुलाई की 14 तारीख तक सारे राज्य में लॉकडाउन है । बालेश्वर से भुवनेश्वर तक सारी गाड़िया बंद हैं । सरकार ने कड़े नियम तो बनाए हैं कि शादी कम लोगों के साथ पूर्वानुमति के साथ होगी । लेकिन गाँवों में स्थिति अलग है । पच्चीस लोगों की अनुमति हो तो पचास वैसे ही हो जाते हैं । दूरी बनाना तो दूर की बात है, मास्क भी नही होता है । गाँवों में आम तौर पर कोरोना के रोगी नही होते। अपने खेत में काम करते और पास के बाजार से जरुरी सामान लेते है । शहरों तक जाना बहुत कम होने के चलते न तो उनमें कोरोना फैलता है, और न ही डर होता है । ऐसे एक दूर दराज गाँव में बैजयन्ती के घर में शादी का मौका हैं । घर पर माँ-पिता जी और एक ही भाई है इसलिए अपने बच्चों के साथ शादी के खुशी के मौके पर शामिल न हो पाने से वह व्याकुल हो उठती है, भाई के द्वारा भेजी गई गाड़ी की राह तकती है ।

शादी के लिए खरीदी गई नई साड़ी को बार-बार देखती थी । बदन पर डालती थी और सोचती थी कि जँच रही है न । फोन की घंटी जैसे बजी, उसने तुरंत फोन उठाया ।

भाई: दीदी, मेरा मन बहुत खराब है ।

बैजयंती के पैरो के नीचे से जमीन खिसक गई। उसने सोचा कि कही शादी तो नही टूट गई ? क्या हुआ ?

भाई :- तुझे लाने के लिए जो गाड़ी मैंने भेजी थी उसे पुलिस ने भुवनेश्वर के लिए नही छोड़ा । गाड़ी लौट आई । माँ और पिताजी का मन भी बहुत खराब है । मैं अब क्या करूं ।

दीदी:- ठीक है.... तू मन खराब न कर । मैं भगवान से प्रार्थना करूंगी कि यह शुभ कार्य अच्छे से पूरा हो । माँ और पिताजी को समझा देना। लॉकडाउन खत्म होते ही मैं पहुँच जाउंगी ।

बैजयंती साड़ी को फेंक सोफे पर बैठ गई । दुख के बादल सारे आसमान में भर गए । उसकी आंखों के सामने भैया-भाभी के दूल्हा-दुल्हन वाला चेहरा नाचने लगा । उसके कानों में बज रही थी सिर्फ शहनाई की धुन..... सिर्फ शहनाई की धुन..... । ●

इंकार

श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव
पत्नी – श्री लोकेश चंद्र लाल

सोमोश्वर बाबू ने मधु को बड़े लाड़–प्यार से पालन–पोषण किया था । वैसे तो सभी माता–पिता अपने बच्चों को स्नेह देते हैं । परंतु सोमेश्वर बाबू ने रघु और मधु में कोई अंतर नहीं किया । मधु ने भी अपने पिता का सर्वदा मान बढाया था । बी. ए. फर्स्ट क्लास पास मधु पढाई–लिखाई के साथ घर के काम–काज में भी निपुण थी । रंग–रूप में भी मधु सरूपा थी । जो भी मधु के संपर्क में आता उससे प्रभावित हुए बिना न रह पाता था ।

समाज का गठन व्यक्तियों के लिए ही हुआ है । मनुष्य के सर्वांगिण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है कि हम समाज में रहकर रीति–रिवाजों का पालन करें । एक अनुशासित वातावरण ही मनुष्य को सबल एवं सफल बनाता है । समाज का कार्य मनुष्य में मानवी गुणों का प्रस्फूटन करना है । बिना व्यक्ति के समाज और समाज के बिना व्यक्ति अपूर्ण है । कई बार हम यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं कि 'मुझ एक से क्या होगा ? समाज के लोग क्या कहेंगे ? समाज में ऐसा ही होता है।" यह कहकर हम अपने कर्तव्यों से विमुख नहीं हो सकते । समय के साथ–साथ हमें भी परिवर्तित होना चाहिए । हमारा स्वयं का परिवर्तन ही समाज बदलाव का बिगुल है ।

घर में आज बहुत रौनक है । मधु को देखने लड़के वाले आ रहे हैं । सबने अपने–अपने हिस्से के क्षेत्र को संभाल रखा है । माँ रसोई में व्यंजन बना रही है । पिताजी बैठक–खाने से लेकर प्रत्येक कमरे का निरीक्षण कर रहे हैं । बाहर के कामों को रघु देख रहा है सबके अंदर उत्साह एवं आनंद है । पहली बार कोई मधु को देखने आ रहा है। हर बाप की तरह मधु के पिताजी की यह इच्छा है कि मधु की शादी एक अच्छे परिवार में हो जहाँ उसे स्नेह के साथ–साथ सम्मान भी प्राप्त हो । लड़के वालों के आगमन के साथ–साथ घर में हलचल दोगुनी हो गई । लड़के का नाम नागेश है जो सरकारी कार्यालय में क्लर्क है और माँ–बाप की इकलौती संतान भी । नागेश के पिताजी अब इस दुनिया में नहीं हैं । उनके जगह पर ही नागेश को नौकरी मिली है । घर में माँ और नागेश के अलावा एक नौकर रहता है ।

पिताजी – जी आपलोगों को यहाँ आने में कोई परेशानी तो नहीं हुई ना ?

नागेश की माँ – ह..ह...जी कुछ ख़ास नहीं । आपका मोहल्ला ज़रा छोटा है न तो चौराहे से लोगों से पूछते–पूछते यहाँ तक पहुँचे हैं । वैसे हमारे घर जब आप आएंगे न तो आपको कोई दिक्कत नहीं होगी । चौराहे पर किसी से भी नागेश के पापा का नाम बोलिएगा तो वो घर पहुँचा देगा ।

पिताजी – जी अच्छा । आप चाय तो लीजिए....ठंडी हो जाएगी ।

नागेश की माँ – यह सब तो चलता रहेगा । आप ज़रा लड़की को बुला लीजिए ।

पिताजी – जी जरूर....मधु बेटी

(पिताजी के आवाज़ देते ही माँ के साथ मधु कमरे

में प्रवेश करती है । मधु के कमरे में प्रवेश करते ही नागेश उसे तिरछी निगाहों से देखता है और फिर नज़रें नीची करके चाय की चुस्की लेने लगता है ।)

नागेश की माँ – मधु को खाना बनाना आता है न? घर की लक्ष्मी रसोई में ही अच्छी लगती है ।

पिताजी – जी...जी...थोड़ा-बहुत बना लेती है । पढाई-लिखाई से जब भी फ़ुरसत मिलती है मधु रसोई में माँ का हाथ बटाती है । वैसे ये काम तो कभी भी सीख सकती है मगर विद्या-धन अर्जित करना बड़े ही सौभाग्य और प्रयास का प्रतीक है ।

नागेश की माँ – जी मुझे लगता है वो सब तो ठीक है मगर लड़कियों का धर्म तो खाना बनाना, घर-गृहस्थी संभालना ही है । हाँ....थोड़ा-बहुत पढाई-लिखाई जरूरी है ताकि अपने आने वाली नस्ल को सीखा सके ।

पिताजी – मधु पढी-लिखी लड़की है और अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है । इस विषय पर आपकी क्या राय है ।

नागेश की माँ – ह...ह...अपने पैरों पर तो यह अभी भी खड़ी ही है । जहाँ तक नौकरी की बात है नागेश तो नौकरी करता ही है । घर की बहु घर के भीतर ही शोभा देती है । देखिए भाई साहब मैंने अपने घर के क़ायदे-कानून सब बता दिए । अगर मधु को हमारे अनुसार रहना है तो लड़की मुझे पसंद है ।

"मगर हमें नहीं पसंद"– पिताजी के इस वाक्य ने घर में अचानक सन्नाटा ला दिया । मैंने अपनी लड़की को पढा-लिखाकर शिक्षित बनाया है ताकि वह स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर सके । मगर आप तो उसे बेड़ियों में जकड़ने की सोच रही हैं । लड़की अवश्य ही घर की लक्ष्मी होती है मगर उस लक्ष्मी को यह निर्णय लेने का पूरा अधिकार है कि वो नौकरी करना चाहती है या नहीं । पढ़ाई का उद्देश्य केवल आने वाली नस्ल को सिखाना नहीं होता । शिक्षा मनुष्य को शिक्षित करती है, उसमें मानवीय गुणों का प्रस्फूटन करती है । मगर मुझे लगता है मेरी बेटी के लिए आपका घर अनुकूल नहीं है ।

पिताजी की इन बातों को सुनकर नागेश और उसकी माँ चुपचाप चली गईं । मधु की आँखों से आँसू निकल रहें थे और यह आँसू उसके पिता पर गर्व के लिए थें ।

लड़की कोई सामान या कोई बोझ नहीं होती जिसे जितनी जल्दी उतार दी जाए उतना अच्छा है । जितने यत्न से हम उसे बड़ा करते हैं उतने ही यत्न और सावधानी से उसका विवाह करना चाहिए । आज किया गया समझौता भविष्य में उसके असीम दुखों का कारण बन सकती है । एक सजग माता-पिता अपने बच्चे का भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं । ●

आप जिस तरह बोलते है, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए । भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए ।

– महावीर प्रसाद द्विवेदी

चल मुझे तू बता

सुश्री प्रीति चंदा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

तुझको क्या चाहिए चल मुझे तू बता,
बड़े दिनों से लग रहा तू मुझे ख़फा ख़फा

जो कल सर्द में था ठिठुरता,
भूख से पेट सिकुड़ता,
आज तन ढक़े हुए, पेट भी भरे हुए
फिर भी तेरा मन क्यों है कचोटता ?
तुझको क्या चाहिए चल मुझे तू बता ।

नींद क्यों उड़ी हुई, चैन भी जुदा है क्यों,
सांस चल रही तेरी, फिर भी मुर्दा है क्यों ।
राह लंबी अभी, तलब तेरी पूरी नहीं,
इस तलब को लिए न जाने गमज़दा है क्यों ।
बेहतर कोई तुझसे है, और तू किसी से है
ये जानकर भी दूसरों से स्वयं को क्यों तोलता ।
अपनी कमियों को गिन ख़ुद को कम मोलता ।
तुझको क्या चाहिए चल मुझे तू बता । ●

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है ।

– जस्टिस कृष्णास्वामी अय्यर

आज को जी लीजिए

सुश्री ज्योति
अनुजा–प्रीति चंदा

कुछ रास्ते गर अकेले चलना पड़े तो मुस्कुरा कर चल लीजिए
बेहद दर्द में भी कुछ बटोरने को मिले तो आँखें मूंद हथेली भर लीजिए ।
कुछ तो तजुर्बा मिलेगा जिंदगी के रोमांचक सफर में
तजुर्बा ना सही तो समय ही कटेगा बेफिक्र हर डगर पे ।

दुखों का पहाड़ बन जाए तो उस पहाड़ के पीछे से उगते सूर्य का प्रतीक हो जाइए,
जब मातम हो अपने घर में तो ज़रा झूमते हुए दूसरों के जशन में शरीक हो जाइए ।
कुछ तो नई दिशा दिखेगी अंधेरें को छांटते हुए
नहीं तो लोगों की भीड़ तो मिलेगी अकेलेपन को बांटते हुए ।

डर लगे जब जीवन के चढाव से तो अम्बर में इक झूला डाल एक बेहतरीन सवारी का लुत्फ उठाइए ।
या गिरने लगे हिम्मत मन की तो लम्बी सांस भरकर समंदर की गहराइयों को छू आइए ।
कुछ नहीं तो जीवन के शून्य होने का बोध होगा,
जीवन ना सही तो मृत्यु के सत्य पर ही कुछ शोध होगा ।

हंसिए जनाब दिल खोल कर और इस आज को जी लीजिए,
बेरुखी लेकर क्या घूमना, मुस्कुरा कर सारे ग़म पी लीजिए । ●

वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक –ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है ।

– पीर मुहम्मद मूनिस

जिंदगी

श्रीमती स्वीटी गुप्ता
पत्नी–श्री सतीश कुमार

खुद से हार कर कभी जान देने की क्यों सोचना,
जिंदगी मिली है कुछ कर गुजरने को, इसे मत कोसना ।
तुम्हें देखकर कुछ लोग जीते हैं उनके बारे में सोचना,
ज़माने का तो काम ही है करना सब की आलोचना ।
कुछ लोगों का काम ही है जख्मों को खरोचना ।
अगर टूट भी गए तो अपने आंसू तुम खुद ही पोछना ।
मैं तुम्हारे साथ हूँ ऐसा कहने वालों को जाँचना,
समय रहते पहचानों इन्हें कहीं आ जाए आंच ना ।
मुश्किलों में कभी तुम ना हारना,
हौसला रख हालातों से जी जान से लड़ना ।
इससे पहले की मजबूरियों में फैला दें कोई जाल ना,
परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालना ।
असफलता मिलती रहे जब, कमियों को खंगालना,
बुरे वक्त में कोई साथ नही होता, अपने को संभालना ।
मेहनत से हर ऊंचाई छुओगे, एक बार अपने आप को आंकना ।
खुद पर भरोसा रख दूसरों के मुंह क्यों ताकना ।
हर मुकाम हासिल होंगें, कठिनाइयों को जरा सहना ।
कर्म ही तो पूजा है, बनाओं इसे अपना गहना ।
जिंदगी एक जंग है, मैदान छोड़कर मत भागना ।
जीत जाओगे हर जंग, बस समय रहते जागना । ●

कामयाबी की तलब

सुश्री पूजा चौहान
अनुजा– श्रीमती मोनिका चौहान

मंजिल मिल ही जाएगी, प्रयास करके तो देख,
खुशियाँ कदमों में आएगी, तलाश करके तो देख ।
बड़ी से बड़ी मुसीबत से लड़ सकता है तू,
पहले छोटी समस्याओं को फतह करके तो देख ।
कठिनाइयाँ हज़ार हो तेरी राहों में मगर,
हल निकल ही आएगा, सबर करके तो देख ।
चाहे कितने भी तूफान आ जाए जिंदगी में,
जीत जाएगा उनसे, मेहनत करके तो देख ।
लाख बाधांए आए, कदम तेरे रुकेंगें नही,
एक बार कामयाबी की तलब करके तो देख ।
सीख लिया मेहनत करना तो कामयाबी मिलेगी जरूर,
अच्छे कर्म कर और रब की इबादत करके तो देख । ●

हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है ।

– मौलाना हसरत मोहानी

पिता का प्यार भला कौन समझ सकता है

राजेश कुमार झा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

किसी कवि की ये पंक्तिया पिता के स्वरूप का बखुवी चित्रण करती है ।

पिता जीवन है, सबल है, शक्ति है
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है
पिता उंगली पकड़े बच्चों का सहारा है
पिता कभी कुछ खट्टा, कभी खारा है
पिता पालन है, पोषण है, परिवार का अनुशासन है
पिता धौस से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है
पिता रोटी है, कपडा है, मकान है
पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है
पिता अप्रदर्शित अनंत प्यार है
पिता है तो बच्चों का इंतजार है
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं
पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं
पिता से परिवार में प्रतिपल राग है
पिता से ही माँ का बंदी और सुहाग है
पिता एक जीवन को जीवन का दान है
पिता दुनिया दिखाने का अहसान है
पिता सुरक्षा है, सिर पर हाथ है
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है
तो पिता से बड़ा तुम अपना नाम करो
पिता का अपमान नहीं, उन पर अभिमान करो
पिता एक उम्मीद है, एक आस है
परिवार की हिम्मत और विश्वास है
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है
उसके दिल में दफन कई मर्म है
पिता संघर्ष की आँधियों में हौसलो की दीवार है
परेशानियों से लड़ने को दो धारी तलवार है
बचपन में खुश करनेवाला खिलौना है
नींद लगे तो पेट पर सुलानेवाला बिछौना है
पिता जिम्मेवारियों से लदी गाड़ी का सारथी है
सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी है
सपनो को पूरा करने में लगने वाली जान है
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है
पिता जमीर है पिता जागीर है
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है
कहने को सब ऊपरवाला देता है
पर खुदा का ही एक रूप पिता होता है।

पिता एक वटवृक्ष है जिसकी शीतल छाँव में सम्पूर्ण परिवार सुख से रहता है। बेटा हो चाहे बेटी उसके जीवन में पिता का क्या महत्तव होता है, इसका अंदाजा हम इसी बात से लगा सकते हैं कि जब छोटी–मोटी चोट लगती है तो "ओ माँ" ही मुँह से निकलता है लेकिन रास्ता पार करते समय यदि कोई ट्रक सामने से अचानक आ जाय तो मुँह से "बाप रे" निकलता है। क्योंकि छोटे–मोटे संकटों के लिए माँ है पर बड़े संकट आने पर पिता ही याद आते हैं। ये बात सही है कि यदि आप थके–हारे घर पहुँचे तो वो माँ ही होती है जो बेटे या बेटी की भूख को समझ जाती है और सबसे पहले खाने के लिए ही पूछती है पर

जीवन–पर्यन्त भोजन की व्यवस्था पिता ही करते हैं और भोजन की व्यवस्था अर्थात रोजी–रोटी की कला भी हमें वही सिखाते है।

व्यक्ति के सामाजिक मूल्यों में परिवार का अहम योगदान होता है। एक परिवार का मुखिया पिता होता है। पिता परिवार को निर्देशित करते है। इस कारण संतान में किन प्रारंभिक मूल्यों का विकास होगा यह पिता पर ही निर्भर करता है।

संतान के लिए पिता से बढक़र त्याग करने वाला व्यक्ति कोई और नहीं हो सकता है। चाहे, पिता कितनी ही मुश्किल में क्यों न हों अपनी संतान को हमेशा ही मुस्कुराता हुआ चेहरा ही दिखाने का प्रयास करता है। वो पिता ही होते है जिन्हें अपने बच्चों से हारने में खुशी होती है। पिता सदैव चाहते है कि उनके संतान उनसे भी ज्यादा तरक्की करें।

ये सच है कि एक संतान को जन्म देने के लिए एक माँ असहनीय प्रसव–पीड़ा बर्दाश्त करती है जो लगभग 57 डेल का कष्ट होता है और ये लगभग एक साथ 20 हड्डियों के टूटने के बराबर दर्द होता है।

लेकिन संतान जब जन्म लेता है तो सबसे ज्यादा खुशियाँ एक पिता के चेहरे पर हीं देखने मिलता है। संतान के जन्म से पहले ही उसकी पूरी सुख–सुविधा की व्यवस्था पिता करते है। माँ बच्चे को जन्म देती है और पिता न केवल उंगली पकड़कर चलना सिखाते है बल्कि जीवन पथ पर अच्छे–बुरे का भेद कर आगे बढना सिखाते है। पिता जिंदगी भर जो मेहनत–मशक्कत कर संपत्ति इकट्ठा करते है उसका हकदार अपने संतान को सहज ही बना देता है। उनके इस त्याग का मोल भला कोई कैसे दे सकता है

इसीलिए कहा जाता है– पिता परमेश्वर है, पिता पालनहार है। पिता से ही भव्य संसार है, पिता ही जीवन का आधार है। माँ अपनी प्यार–दुलार, ममता, करूणा बच्चों के सामने आँसू बहाकर जाहिर कर लेती है लेकिन पिता अपना प्यार अपने बच्चों के सामने कभी सही तरीके से जाहिर नहीं कर पाता है। अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमेशा उसे डाँटता–फटकारता रहता है। इसी वजह से जहाँ माँ को ममता की देवी कहा जाता है वही पिता को हिटलर की उपाधि दी जाती है, भला ये कैसी विडंबना है।

घर की लक्ष्मी कही जाने वाली बेटियाँ माँ–बाप के आँखों का तारा होती है। बेटा अगर माँ की जान होता है तो बेटियाँ अपने पिता का नूर होती है। पिता और बेटी के पारस्परिक प्रेम को शब्दों की माला में पिरोया नहीं जा सकता है। जब बेटी की शादी होती है तो पिता के चेहरे पर चिंता और खुशी दोनों की झलक मिलती है। जहाँ एक ओर खुशी इस बात की होती है कि वो अपनी बेटी का हाथ अपने से ऊँचे खानदान और हैसियत वाले जीवन–साथी के हाथ में दे रहे है वहीं चिंता इस बात की होती है कि अब उनके जान से प्यारी बेटी उनसे दूर हो जाएगी। जब बेटी की विदाई होती है तो पूरा परिवार रोता है लेकिन बाप बेटी के घर से जाने के बाद फूट–फूटक रोते है।

पिता हमें जीवन में आने वाली विपदाओं को डाटकर सामना करना सीखते है। वो परिवार के सभी सदस्यों के सबी तरह की सुख–सुविधाओं का बखूबी ख्याल रखते हैं। अपने परिवार पर आनेवाले दुखों को दूर करने के लिए चट्टान की भांति हमेशा तत्पर रहते हैं। एक रिक्शा चलानेवाला बाप भी हमेशा चाहता है कि उसका बेटा एक अच्छे स्कूल में पढ़े और पढ़–लिखकर उनका नाम रौशन करें। पिता एक ऐसा बैंक होता है जिनके जेब अपने बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमेशा भरे होते है। इसीलिए कहा भी कहा जाता है कि शौक तो बाप के कमाई से पूरी होती है अपनी कमाई से तो सिर्फ

जरूरतें पूरी होती है।

एक छोटा बच्चा अपने पिता को ही पूरा संसार समझता है। जब एक नन्हें से बच्चें को हवा में उछाला जाता है कि तो वह खुशी की किलकारियाँ भरता है बजाय डरने के, क्योंकि उसे पता है कि उसके पिता उसे अपने गोद में थाम लेंगें, गिरने नहीं देंगे। एक छोटे बच्चें से जब मैने पूछा कि यदि तुम जंगल से अपने पिता के साथ गुजर रहे हो और अचानक शेर आ जाय तो तुम कितना डरोगे तो उसका जवाब सुनकर मै स्तब्ध हो गया उसने कहा कि मेरे पिता जब मेरे साथ है तो भला शेर मेरा क्या बिगाड़ सकता है। एक बच्चे के लिए उसके पिता सर्वशक्तिमान और सुपरहीरो होते है।

सन्तान के लिए पिता घर की छत की तरह होता है जिसके बिना उसे खुले आसमान के तले सोना पड़ता है । बिना पिता के घर चलाना बेहद मुश्किल होता है। पिता को खोने का दर्द वे लोग ही समझ सकते हैं जिन्होनें अपने पिताजी को खोया है। यदि संतान अपने माता–पिता की राह पर चले और उनके आदेश को ईश्वर का आशीर्वाद माने तो दुनियाँ में बड़ी से बड़ी कामयाबियाँ उसके कदम चूमेगी । ●

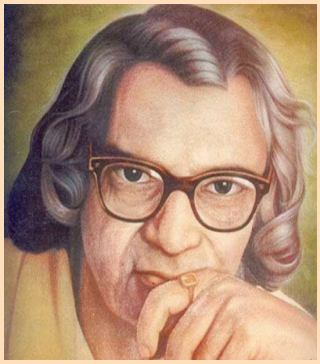

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है ।

– सुमित्रानंदन पंत

भारत में बढ़ता शहरीकरण

श्रीमती निभा रंजन
पत्नी–श्री आशीष रंजन

औद्योगीकरण के इस तेज उन्नति के दौर में शहरीकरण को अधिक बढ़ावा मिल रहा है । गाँव के कुछ वर्ग अपना सब कुछ छोड़कर शहरों में अपने परिवार के साथ बसना चाहते हैं । शहरों में रोजगार के अवसर मिलने के साथ उच्च शिक्षा का भी अधिक अवसर मिल रहा है ताकि वह और उनके बच्चे संपन्न जीवन जी सकें । गाँव के लोग शहरी जीवन को देखकर आकर्षित होते हैं, और यहीं आकर बस जा रहे हैं जबकि उन्हें गाँव छोड़कर शहरों में आकर बसने से और अधिक तकलीफों का सामना करना पड़ता है । और वह झुग्गी–झोपड़ियों में रहने को विवश हो रहे है । गरीबी, अशिक्षा के कारण उनकी हालत शहरों में अधिक दयनीय हो जाती है ।

शहर में उन्हें रोजगार तो आसानी से मिल जाता है मगर यहाँ की महंगाई के कारण उनकी हालत और खराब हो जाती है । उन्हे लगता है कि शहरों में आकर उनकी गरीबी की समस्याएं दूर हो जाएंगी परंतु होता है इसका उल्टा । शिक्षा के अभाव के कारण उन्हें अच्छा रोजगार नही मिल पाता है । शहरों में हर प्रकार की सुविधा जैसे कि अच्छी शिक्षा, अच्छी चिकित्सा, यातायात की सुविधा और मनोरंजन के कई साधन मौजूद है ।

शहरों में जीवन को आसान बनाने वाली चीजें जैसे अच्छे घर, साफ पानी, बिजली मौजूद है । अच्छे स्कूल, कॉलेज और शिक्षण संस्थाएं शहरों में गांवों के मुकाबले ज्यादा अच्छी है । जिस कारण युवा वर्ग शहरों की तरफ अग्रसर होने लगा है । शहर की आबादी में तेजी से वृद्धि होने के कारण प्रतिस्पर्धा का माहौल बन रहा है । जनसंख्या वृद्धि के कारण बेरोजगारी के हालात पैदा हो रहे है । लोग इसलिए चोरी जैसे अपराध को अंजाम दे रहे हैं । अत्यधिक आबादी होने के कारण आक्षय और परिवहन की जरूरतें भी बढ़ रही है । आबादी बढ़ने के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधन जैसे– जल, वायु की मांग बढ़ रही है । शहरों में बढ़ती आबादी के कारण सड़कों पर ट्रैफिक जाम जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही है ।

भारत एक कृषि प्रधान देश है । यहाँ की भूमि उपजाऊ है । मगर आजकल लोग गाँव में खेती नही करना चाहते है । ये तो सोचनें वाली बात है कि अगर कोई कृषि नही करना चाहेगा, तो लोग खाएंगें क्या ? अगर हमारे देश में किसान फसल नही उगायेंगें तो हमें भोजन कहाँ से प्राप्त होगा ?

भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ. करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों जैसे – पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा का भरपूर उपयोग किया जा रहा है । उद्योगों के विकास के लिए वृक्षों की अंधाधुध कटाई की जा रही है । शहरों में तेजी से बढते प्रदूषण के कारण मौसम में अत्यधिक गर्मी और ग्लोबल वार्मिंग जैसी अनेक गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो रही है ।

इस तरह की अनेक समस्याओं को नियंत्रित करने के लिए जरूरी है कि ग्रामीण क्षेत्रों को अधिक विकास करने की जरूरत हैं । किसानों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए । गांवों में भी उद्योग–धंधे, कल–कारखाने

के क्षेत्र में अत्यधिक-प्रगति की जरूरत है। जनसंख्या नियंत्रित करने की बेहद जरूरत है, जिससे सारी समस्याओं का समाधान भी होगा ।

प्रदूषण की समस्या से हर वर्ष करीब दस लाख लोग समय से पहले काल के गाल में समा जाते हैं । एक रिपोर्ट के मुताबिक विकासशील देशों में 70% से ज्यादा आबादी झुग्गी-झोपड़ियों में रहती है जो आने वाले वर्षों में बढ़ती ही जाएगी । पर्यावरण विशेषज्ञ बार-बार आगाह कर रहे है कि धरती का जल अब इसी बात पर निर्भर करता है कि हम अपने शहरों को कैसे सजाते संवारते है। वे यह भी कहते है कि शहरों का भविष्य इसी बात पर निर्भर है कि अगले आने वाले सालो पर लगातार बढ.रहे बोझ को किस तरह नियंत्रित किया जाता है । ●

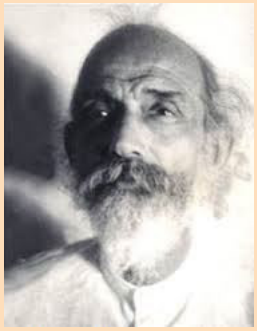

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।

– पुरूषोत्तम दास टंडन

गीता सार

श्री रितुध्वज
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हम सब केवल आत्माएं हैं और यह जीवन हम आत्माओं के लिए एक परीक्षा है अपने सर्वश्रेष्ठ रूप को बाहर निकालने का और श्रीमद्भगवद्गीता इस परीक्षा को उत्तीर्ण करने की सबसे अहम पुस्तक है इस पुस्तक में 18 अध्याय हैं। गीत, बाइबल, कुरान, गुरु ग्रंथ साहिब यह सभी पुस्तकें ईश्वर द्वारा दिखाए गए रास्ते से मनुष्य को परिचित कराती है। सभी का एक ही मूल है– आत्मा का परमात्मा से मिलन व इस शरीर से जन्म तथा मृत्यु के बंधन से मुक्ति।

ईश्वर कहते हैं कि मैं ही सब की शुरुआत हूँ। मैं शुरू से भी पहले था और सब खत्म होने के बाद भी मैं ही रहूंगा। सब मुझ में हैं और मैं सब में हूँ। यह नदियां, पहाड़, जंगल, सूर्य, तारे, ग्रह नक्षत्र सब मैंने ही बनाए ।

मैंने ही भगवान, शैतान, राक्षस, इंसान व जीव जंतु सबकी रचना की है। मैं सर्वव्यापी हूँ सब में रहता हूँ। मैं ही ब्रह्मा बनके सबकी रचना करता हूं, मैं ही विष्णु बनके सबका पालन करता हूँ और मैं ही रुद्र बनके सब नष्ट कर देता हूं। मैं यूं ही सृष्टि बनाता और तोड़ता रहूंगा ताकि आत्माओं को मौके मिल सकें इस मानव जीवन को प्राप्त करके इस जन्म और मृत्यु के भवसागर से पार एक दिन मुक्ति पाकर हमेशा के लिए आत्मा का परमात्मा से मिलन करने के लिए।

ईश्वर कहते हैं कि आत्मा अजर अमर है, जिसे ना कोई मार सकता है, न जला सकता है, ना ही काट सकता है, ना पानी में डूबा सकता है लेकिन आत्मा का अंतिम ध्येय है परमात्मा से मिलन और इस मिलन के लिए आत्मा को इस जीवन रूपी परीक्षा में बैठना ही पड़ेगा। 84 करोड़ योनियों को जीने और भोगने के बाद एक आत्मा को मनुष्य का शरीर व दिमाग मिलता है सबसे बड़ी मर्यादाओं की परीक्षा में बैठने के लिए। परीक्षा के दौरान हर आत्मा को जीवन के चारों स्तंभ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का ज्ञान पाकर ही मुक्ति मिलती है यही वो द्वार हैं जिन्हें समझ के आत्मा परमात्मा को समझ सकती है ।

धर्म: धर्म वह है जो धारण किया हुआ है, जिसे आप स्वीकार करते हैं। अपने शरीर को सुदृढ़ रखना, अपने तन मन एवं विचारों को निर्मल रखना, जहां तक हो सके सबकी सहायता करना, सभी जीव जंतुओं पर दया करना, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की कामना करना, झूठ नहीं बोलना, चोरी ना करना, दूसरों का नुकसान ना करना यही सब धर्म है। हर आत्मा को अपने जीवन काल में धर्म का पालन करना होगा व उसकी रक्षा करनी होगी।

अर्थ: आत्मा अपने हर जीवनकाल में अपने पृथ्वी पर होने का अर्थ या मूल कारण समझे, जीवन में भोग्य वस्तुओं का आनंद ले। इस मानव जीवन में जो जो कर्तव्य मनुष्य को मिले हैं उन सभी का निर्वहन पूरी निष्ठा से करें जैसे सभी रिश्ते चाहे एक पुत्र, एक भाई, एक पिता, एक पति, एक दादा, एक गुरु, एक शिष्य, एक मित्र शत्रु या अन्य जो भी रिश्ते उसे इस मानव जीवन में मिले हैं उन सभी को पूर्ण निष्ठा के साथ निभाए, हर रिश्ते की सभी जिम्मेदारियों को पूर्ण करे, उनके लिये धन अर्जित करे,

यथाशक्ति अपना समय धन एवं अन्य जिसे जैसी जरूरत हो वैसे उन सभी मानवीय रिश्तों की जरूरतें पूरी करे, यही अर्थ का द्वार है।

कामः हर मनुष्य के अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या एवं अहंकार नामक भावनाएं रहती हैं। इन भावनाओं के प्रभाव में हम अपने व दूसरों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। इन भावनाओं को हर मनुष्य को हमेशा अपने नियंत्रण में रखना होगा क्योंकि इन भावनाओं के भाव में किया गया कोई भी कार्य हमे जीवन भर की परेशानी में डाल सकता है। संतोष, सादगी, योग एवं प्राणायाम के द्वारा इन भावनाओं पर विजय पाई जा सकती है। पतंजलि ने योग के आठ अनिवार्य अंग बताए हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। देश विदेश में योगासन को ही योग समझा जा रहा है। इन सभी पर कभी और चर्चा करते हैं।

मोक्षः इस परीक्षा रुपी जीवन में हर मनुष्य की समय समय पर कुछ इच्छाएं रहती है। कुछ इच्छाएं एक ही जीवन काल में पूरी हो जाती है और कुछ इच्छाएं अधूरी रह जाती हैं। उन अधूरी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए एक आत्मा बारंबार इस परीक्षा रुपी जीवन को प्राप्त करती है और बार-बार परीक्षा में बैठती है। मोक्ष के द्वार का अर्थ है सभी इच्छाओं का त्याग और जन्म एवं मृत्यु के प्रपंच से पूर्णतः मुक्ति।

जब तक आत्मा इन चारों द्वारों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को समझकर इनके अनुरूप कर्म करके मुक्ति प्राप्त नहीं कर लेती तब तक इस मनुष्य रुप में बार-बार जन्म लेना पड़ेगा परीक्षा का समय समाप्त होते ही आत्मा शरीर व अन्य सभी वस्तुओं का त्याग कर देती है। जो भी संसार में रहकर बनाया वह सब अब किसी और का होगा। देह त्यागकर वह आत्मा अपने कर्मों के परिणाम के लिए चली जाती है। आत्मा द्वारा किए गए अच्छे एवं बुरे कर्मों का हिसाब होता है। अच्छे कर्मों के लिए आत्मा स्वर्गीय सुख भोगती है व दुष्कर्मों के लिए आत्मा नर्क में सजाएं भोगने के लिए चली जाती है। स्वर्ग और नरक भोगने के बाद फिर से आत्मा को परीक्षा के लिए भेजा जाता है, फिर से 84 करोड योनियों में जन्म लेने के बाद मानव का जीवन मिलता है। हर जन्म में अपने पुराने सभी जन्मों के कर्मों के हिसाब से कभी अच्छे और कभी बुरे हालातों से जाना पड़ता है लेकिन जबतक आत्मा परमात्मा से मिलन को नहीं समझ लेती मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती। भगवदगीता समझाती है कि मनुष्य अपने शरीर, दिमाग आदि से भगवान को पा सकता है। शरीर के कर्मो द्वारा ईश्वर प्राप्ति का प्रयास कर्मयोग कहलाता है। भगवान श्री कृष्ण ने कर्म योग को ही सबसे अधिक महत्व दी है इसीलिए इन्हे कर्मयोगी भी कहा जाता है । उनके अनुसार कर्म करे जा फल की इच्छा मत कर । इंसान जैसा कर्म करेगा वैसा फल देगा भगवान। ●

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतिक है ।

– डॉ. संपूर्णानंद

तेरा गाँव

श्री अखिल जेना
पर्यवेक्षक

धनिआ तू लौट आ, मेरे भैया,
कोई भी नही है, तुझे मनाने को,
नही है इतना बड़ा पेड़,
तुझे अपने छाँव देने को,
बिखरा हुआ गाँव, टूटा हुआ तन–मन,
धनिआ तू लौट आ...
गुस्सा–अभिमान छोड़कर,
अपनी सोच बढ़ा मेरे भैया,
तेरा गाँव तुझे पुकारे,
खो गया है जो...
बादल से बारिश, मिट्टी से भरोसा,
उत्सव से अपनापन,
बोली से मिठास, संपर्क से श्रद्धा...
ठीक गौरेया चिड़िया की घोसलें की तरह,
भैया तेरे मन में वो मुखिया की रूह जिंदा रहे,
टूटे हुए दिलों को दिलासा देने के लिए ..... ●

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है ।

– रविशंकर शुक्ल

मिशन मंगल : नासा

श्री प्रदीप कुमार नंदा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अंतरिक्ष की कठोरता से परिक्रमा करने के इरादे ने मानव को चंद्रमा और मंगल जैसे उपग्रह की तरह आकर्षित किया। इसलिए, दुनिया के सभी वैज्ञानिकों और खगोलविदों ने आज तक चंद्रमा और मंगल ग्रह पर अपने शोध को जारी रखा है। निकट अतीत में, हमारे देश ने हमारी अंतरिक्ष एजेंसी इसरो के सफल चंद्रयान मिशन के कारण बहुत सम्मान अर्जित किया है। लेकिन इस वैज्ञानिक प्रयोग में अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा इस सूची में सबसे ऊपर है। नासा, जिसने 60 साल पहले चंद्रमा की धरती पर मानव को सफलतापूर्वक उतारकर इतिहास रचा था, उसने अब तक इतिहास रचा है। इस बार नासा का उद्देश्य लाल ग्रह है। इसने 19 फरवरी को मंगल की धरती पर पूर्व भेजे गए रोवर को सफलतापूर्वक उतारा। नासा का मंगल अन्वेषण रोवर मिशन इस ग्रह के बारे में बहुत कुछ जानने की इच्छा में मदद करेगा। यह आधुनिक उपकरणों और अनुसंधान उपकरणों के साथ अमेरिका की अंतरिक्ष अनुसंधान एजेंसी द्वारा 30 जुलाई 2020 को भेजा गया था। यह महंगा रोवर सुरक्षित मंगल पर उतरा। नासा ने तीसरी बार यह उपलब्धि हासिल की। रेड प्लेनेट, मंगल ग्रह पृथ्वी से 20 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। रेडियो तरंगों को प्रकाश की गति से यात्रा करते हुए पृथ्वी से मंगल पर पहुंचने में 11 मिनट लगते हैं। इसका अर्थ है कि मंगल से किसी भी संकेत को प्राप्त करने या भेजने में कम से कम 11 मिनट लगते हैं। मंगल के बारे में जानने के लिए मानव क्यों इच्छुक है ? इसका कारण भविष्य में मानवों के लिए वैकल्पिक आवास की योजना बनाना है। इस प्रयोजन के लिए, रोवर पहले मंगल की सतह में पानी की खोज करेगा। यदि रेड प्लेनेट की तस्वीर की जांच की जाती है, तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि बहुत सारी नदियाँ हैं जो सूख गई हैं। यह अब एक सूखी नदी की तरह दिखाई दे रही है जो बहुत लंबी है। इसलिए रोवर का काम नदी के पास जाना और उसका निरीक्षण करना है। रोवर उतरने के बाद धीरे–धीरे आगे बढेग़ा और उस क्षेत्र की तस्वीरों को सीधे पृथ्वी पर भेजेगा। इसके लिए बहुत ही आधुनिक मास्टकैम कैमरा लगाया गया है। यह ज़ूम मोड के साथ दूर दराज के क्षेत्रों की तस्वीरें भी ले सकता है। यह रोवर की आंख की तरह है, जो कुछ भी देखता है, उसका तस्वीर लेता है। निकटवर्ती क्षेत्रों में हवा में शीतोष्ण, आर्द्रता, हवा की गति और हवा में अन्य कणिकाओं का विवरण प्राप्त करने के लिए इसके साथ एक मौसम विज्ञान उपकरण लगाया गया है। इसके साथ लगाया गया एक और महत्वपूर्ण उपकरण मोक्सी है जिसका अर्थ है स्थानीय ऑक्सीजन प्रयोगशाला। यह भविष्य में मानव के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता के लिए मददगार होगा। यह मंगल के वायुमंडल से ऑक्सीजन का उत्पादन करेगा। इसके अलावा मंगल की मिट्टी का तुरंत परीक्षण करने और नमक की मात्रा और मिट्टी की अन्य सामग्री की रिपोर्ट करने के लिए इसके साथ कई अन्य उपकरण लगाए गए हैं। कुल मिलाकर, इसमें 18 कैमरे, 7 अति आधुनिक उपकरण और दो माइक्रोफोन हैं।

रोवर ने अपने साथ एक छोटा हेलिकॉप्टर रखा है; जो पृथ्वी के बाहर ग्रहों के आसपास उड़ सकता है। यह इस तरह की पहली मशीन है। यह दिन में पांच बार उड़ान भर सकता है और नमूने और जानकारी एकत्र कर सकता है जिसे नासा के नियंत्रण कक्ष में भेजा जा सकता है। इस मिशन में रोवर उन जीवाश्मों की खोज कर सकता है जो मंगल की पथरीली सतह पर उपलब्ध हो सकते हैं। यह मंगल की मिट्टी और पत्थर के नमूने एकत्र करेगा। यह मिशन ढाई साल तक जारी रहेगा। यह रोवर एक छोटी कार की तरह दिखता है, जिसका वजन लगभग एक टन है और इसमें छः टाइटेनियम आधारित एल्युमिनियम पहिए हैं। रोवर का नाम चयन करने हेतु एक खुली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था । इस प्रतियोगिता के दौरान कक्षा ७ के स्कूली बच्चों द्वारा इसका नाम 'पर्सिविनेक्स' का प्रस्ताव दिया गया जो चयनित हुआ । इस मिशन पर नासा का उद्देश्य भविष्य में मंगल पर मानव निवास सुनिश्चित करना है। यह नासा का दुर्लभ कार्य है । ●

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

– मदन मोहन मालवीय

कार्यालय का आकर्षण केंद्र - बागीचा

श्रीमती मोनिका चौहान
कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय का बागीचा एक ऐसा स्थान जहाँ हमें एक अलग प्रकार का सुख मिलता है, जो हमारे मन को सुखदायी शांति प्रदान करता है । कार्य के तनाव से बाहर आने के लिए कार्यालय के बगीचे से बेहतर कोई स्थान है ही नही । कार्यालय के बगीचे में अनेक प्रकार के पेड़-पौधे है । बागीचे की फुलवारी बेहद आकर्षक है जिसमें लगभग 35-40 भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों के पौधें हैं । इसमें कुछ सजावटी पौधें भी हैं, जिनकी पत्तियाँ बेहद आकर्षक है । फूलों के पौधें सामान्य तौर पर सितम्बर से अप्रैल माह तक रहते थे । इस अवधि में कार्यालय की सुन्दरता देखते बनती है ।

फुलवारी देखनें में जितनी सुंदर होती है उसकी देखभाल करने में उतनी ही मेहनत लगती है । कोई भी माली फुलवारी का प्रबंधक होता है । हमारे कार्यालय की फुलवारी के मुख्य प्रबंधक श्री एम. जग्गाराव जी है जो अपने सहयोगी प्रबंधकों के साथ फुलवारी की देख-रेख करते है । हमारे कार्यालय की फुलवारी के पुष्पों की फरवरी (माघ) माह दिनांक 11.02.2021 को ली गई तस्वीरें इस प्रकार है:-

1. डहेलिया (Dahlia)

2. **सूर्यमुखी** (Sunflower)

3. **आस्टर** (Aster)

4. **डबल पिटुनियाँ** (Double Petunia)

5. **इम्पैशन** (Impatiens)

6. **जेरानियम** (Geranium)

7. **पेन्सी** (Pansy)

8. **साल्विया** (Salvia)

9. **एलीसियम** (Alyssum)

10. **नासटर्टियम** (Nasturtium)

11. **फ्लॉक्स** (Flocks)

12. **डॉयनताश** (Dianthus)

13. **छोटा जीनिया** (Small Zinnia)

14. **गेंदा** (Marigold)

15. **अन्टिर्हिनम** (Antirrhinum)

16. **सिलोसिया** (celosia)

17. **स्टॉक** (Stock)

18. **पोइंसेटिया** (Poinsettia)

19. **सिल्वर डस्ट सिनेरेरिया** (Silver dust cineraria)

20. **गजानिया** (Gazania)

21. **वर्बेना** (Verbena)

22. **जीनिया** (Zinnia)

23. **देशी ऑस्टर** (Desi Aster)

24. **थूजा प्लांट** (Thuja Plant)

25. **ओर्नामेंटल गोभी** (Ornamental Cauliflower)

26. **केलेन्डुला** (Calendula)

27. **गुड़हल** (Hibiscus)

28. **गुलाब** ((Rose)

बागीचे की अन्य आकर्षक पेड़-पौधे

बागीचे के मुख्य प्रबंधक-श्री एम. जग्गाराव जी

कार्यालय में फलदायक पेड़ भी है । जिसमें मुख्य रूप से आम एवं जामुन के पेड़ हैं । कार्यालय में कुछ अन्य पेड़ जैसे- कटहल, पपीता, केले एवं बेल भी है । नारियल के पेड़ों को सजावटी तरीके से उगाया गया है, ऐसा लगता हैं मानों सभी पेड़ एक कतार मे खड़े है । कार्यालय में एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ है, जो हमारा राष्ट्रीय पेड़ भी है । कार्यालय में इतने पेड़-पौधे है कि सबकी तस्वीरें एक लेख में प्रस्तुत करना बहुत मुश्किल हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नही होगा कि यदि कार्यालय के बागीचे के संबंध में लिखा जाए तो एक पुस्तक तैयार की जा सकती है । ●

10. **नासटर्टियम** (Nasturtium)

11. **फ्लॉक्स** (Flocks)

12. **डॉयनताश** (Dianthus)

13. **छोटा जीनिया** (Small Zinnia)

14. **गेंदा** (Marigold)

15. **अन्टिर्हिनम** (Antirrhinum)

16. **सिलोसिया** (celosia)

17. **स्टॉक** (Stock)

18. **पोइंसेटिया** (Poinsettia)

19. **सिल्वर डस्ट सिनेरेरिया** (Silver dust cineraria)

20. **गजानिया** (Gazania)

21. **वर्बेना** (Verbena)

22. **जीनिया** (Zinnia)

23. **देशी ऑस्टर** (Desi Aster)

24. **थूजा प्लांट** (Thuja Plant)

25. **ओर्नामेंटल गोभी** (Ornamental Cauliflower)

26. **केलेन्डुला** (Calendula)

27. **गुड़हल** (Hibiscus)

28. **गुलाब** ((Rose)

बागीचे की अन्य आकर्षक पेड़-पौधे

बागीचे के मुख्य प्रबंधक-श्री एम. जग्गाराव जी

कार्यालय में फलदायक पेड़ भी है । जिसमें मुख्य रूप से आम एवं जामुन के पेड़ हैं । कार्यालय में कुछ अन्य पेड़ जैसे- कटहल, पपीता, केले एवं बेल भी है । नारियल के पेड़ों को सजावटी तरीके से उगाया गया है, ऐसा लगता हैं मानों सभी पेड़ एक कतार मे खड़े है । कार्यालय में एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ है, जो हमारा राष्ट्रीय पेड़ भी है । कार्यालय में इतने पेड़-पौधे है कि सबकी तस्वीरें एक लेख में प्रस्तुत करना बहुत मुश्किल हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नही होगा कि यदि कार्यालय के बागीचे के संबंध में लिखा जाए तो एक पुस्तक तैयार की जा सकती है । ●

हिंदी विशेष

अंकीता कुमारी अजय
पत्नी – शैलेन्द्र कुमार

विश्व में हिंदी की गूंज के लिए प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरुआत विश्व के सभी देशों में हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु की गई थी । हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए बहुत सारी संस्थाएं भारत तथा विदेशों में कार्य कर रही हैं जो निम्नलिखित है:–

1. अक्षरम्
2. अखिल भारतीय अनुवाद परिषद, अहमदाबाद
3. अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल
4. अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, पटना
5. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद
6. अखिल भारतीय साहित्य परिषद
7. अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ, दिल्ली
8. अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन
9. अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली
10. अखिल विश्व हिन्दी समिति
11. अंग्रेजी अनिवार्यता विरोधी समिति
13. अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, सेलम, एनएच, (अमेरिका)
13. अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति, वर्जिनिया (सं.रा.अ)
14. अपनी भाषा, कोलकाता
15. अरुणाचल नागरी संस्थान, ईटानगर
16. अलबर्टा हिंदी परिषद
17. असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी
18. आन्ध्र प्रदेश हिन्दी प्रचार, हैदराबाद
19. आरा नागरी प्रचारिणी सभा, आरा (बिहार)
20. उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ
21. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
22. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
23. **ओड़िशा राष्ट्रभाषा परिषद, पुरी**
24. कथा यू.के.
25. कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बंगलुरू
26. कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति, बंगलुरू
27. कहानी लेखन महाविद्यालय, अंबाला
28. कादंबरी, जबलपुर
29. काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
30. केंद्रीय सचिवालय, हिंदी परिषद, नई दिल्ली
31. केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली
32. केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली
33. केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली
34. केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली
35. केन्द्रीय हिन्दी समिति
36. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
37. केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरूवनंतपुरम
38. केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरूवनंतपुरम
39. क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग
40. गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
41. घनश्यामदास सराफ ट्रस्ट, मुंबई
42. छत्तीसगढ.प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, रायपुर
43. जैमिनी अकादमी, पानीपत

44. तमिलनाड़ हिदी अकादमी, चेन्नई
45. दक्षणि भारत हिन्दी प्रचार सभा
46. दक्षणि भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई
47. दक्षणि भारत हिन्दी प्रचार सभा, धाड़वाड़
48. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजभाषा विभाग
49. नव उन्नयन, नई दिल्ली
50. नागरी प्रचारिणी सभा
51. नागरी लिपि परिषद्
52. नागरी लिपि परिषद् नई दिल्ली
53. नेपाल हिन्दी साहित्य परिषद
54. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजनपीठ, बिलासपुर
55. परिकल्पना सम्मान
56. परिमल, इलाहाबाद
57. पुरुषोत्तमपुर हिन्दी प्रचार सभा, गंजाम, उड़ीसा
58. पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, शिलांग
59. बंगीय हिन्दी परिषद, कोलकाता
60. बम्बई हिंदी विद्यापीठ, मुंबई
61. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
62. बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना
63. भारतीय अनुवाद परिषद् नई दिल्ली
64. भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
65. भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता
66. भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद, वाशी, नवी मुंबई
67. भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर
68. भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग
69. मणिपुर हिन्दी परिषद, इंफाल
70. मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल
71. मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, ग्वालियर
72. मध्य भारत हिन्दीह साहित्य समिति, इंदौर
73. महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
74. महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे
75. मातृभाषा विकास परिषद
76. माधवराव सप्रे संग्रहालय, भोपाल
77. मानस संगम, कानपुर
78. मारिशस हिन्दी संस्थान, मारिशस
79. मुंबई प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, मुंबई
80. मुंबई हिन्दी विद्यापीठ, मुंबई
81. मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, बंगलुरु
82. मोकामा अंचल तुलसी साहित्य परिषद् मोकामा
83. राजभाषा आयोग
84. राजभाषा कार्यान्वयन समिति
85. राजभाषा विधायी आयोग एवं राजभाषा खंड
86. राजभाषा विभाग
87. राजभाषा संघर्ष समिति, दिल्ली
88. राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
89. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
90. राष्ट्रभाषा महासंघ, मुंबई
91. राष्ट्रभाषा विचार मंच, अम्बाला
92. राष्ट्रीय अनुवाद मिशन
93. राष्ट्रीय हिन्दी परिषद, मेरठ
94. राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, तिरूवनंतपुरम
95. विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर
96. विजय वर्मा मेमोरियल ट्रस्ट, मुंबई
97. विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नागपुर
98. विश्व हिन्दी परिषद
99. विश्व हिंदी न्यास समिति
100. विश्व हिन्दी सचिवालय, मारिशस
101. विश्व हिन्दी सम्मेलन
102. विश्व हिन्दी संस्थान
103. विश्वेश्वरानंद वैदिक शोध संस्थान, होश्यारपुर
104. वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद, टीकमगढ.

105. वैज्ञनिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली
106. श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर
107. श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर
108. संसदीय राजभाषा समिति, नई दिल्ली
109. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
110. साहित्य अकादमी, भोपाल
111. साहित्य मण्डल, नाथद्वारा
112. सृजन सम्मान
113. सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति, राजकोट
114. स्वातितिरुनाल बालराम वर्मा
115. हिंदी परिषद, नीदरलैंड्स
116. हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद
117. हिंदी साहित्य सभा, टोरंटो
118. हिंदी सेवी महासंघ, इंदौर
119. हिन्दी अकादमी, दिल्ली
120. हिन्दी अकादमी, दिल्ली
121. हिन्दी परिषद, नीदरलैंड
122. हिन्दी प्रचार–प्रसार संस्थान, जयपुर
123. हिन्दी प्रचारक संघ, तमिलनाडु
124. हिन्दी प्रचारिणी सभा, मारिशस
125. हिन्दी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस
126. हिन्दी भवन, नई दिल्ली
127. हिन्दी यूएसए
128. हिन्दी विज्ञान साहित्य परिषद, भा. प. अ. के., मुंबई
129. हिन्दी विद्यापीठ, देवघर
130. हिन्दी विद्यापीठ, देवघर
131. हिन्दी विद्यापीठ, हरिद्वार
132. हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग
133. हिन्दी शिक्षा संघ दक्षणि अफ्रीका
134. हिन्दी शिक्षा समिति, उड़ीसा, कटक
135. हिन्दी शिक्षा समिति, जहीराबाद
136. हिन्दी संगठन
137. हिन्दी संगठन, मारिशस
138. हिन्दी समाज, सिडनी
139. हिन्दी संरक्षण संघ
140. हिन्दी सलाहकार समिति
141. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
142. हिन्दी सेवा समिति
143. हिन्दी सेवी महासंघ, इंदौर
144. हिन्दी सोसाइटी, सिंगापुर
145. हिन्दुस्तानी अकादमी
146. हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
147. हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुंबई

विश्व हिंदी दिवस पर कई सम्मेलनों के सफल आयोजन के दौरान हिंदी संबंधी गतिविधियों के लिए यह निर्णय लिया गया कि मॉरिशस में विश्व हिंदी सचिवालय का गठन किया गया । भारत तथा मॉरिशस दोनो सरकारों द्वारा इस समझौते पर हस्ताक्षर किए गए तथा मॉरिशस विधान सभा में अधिनियम पारित किया गया। तत्पश्चात 11 फरवरी, 2008 को विश्व हिंदी सचिवालय ने मॉरिशस में आधिकारिक रूप से कार्य प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार हिंदी को वैश्विक पटल पर रखने के लिए यह सचिवालय निरंतर कार्यरत है।

प्रथम हिंदी समाचार पत्र 30 मई 1826 को कोलकाता से जारी किया गया जिसका नाम 'उदंत मार्तंड' था। यह एक संस्कृत शब्द है जिसका मतलब 'उगता हुआ सूर्य' होता है। सरकारी आर्थिक सहायता न मिलने के कारण इस समाचार पत्र ने अपने 79वें अंक के प्रकाशन के बाद सांसे लेना बंद कर दी। उदंत मार्तंड की तिथि 30 मई को ही वर्तमान समय में हिंदी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है। ●

श्री जगन्नाथ मंदिर - यमशिला

श्री कालीप्रसाद मिश्र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ओड़िशा राज्य के शहर पुरी में श्री जगन्नाथ मंदिर हिन्दुओं का प्रसिद्ध मंदिर है, यह मंदिर भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित है। जगन्नाथ शब्द का अर्थ जगत का स्वामी होता है। पुरी नगर श्री कृष्ण यानी जगन्नाथ जी की पावन नगरी कहलाती है। वैष्णव सम्प्रदाय का यह मंदिर हिंदुओं की चार धाम यात्रा में गिना जाता है। जगन्नाथ मंदिर से हर साल निकलने वाली रथ यात्रा का उत्सव संसार में बहुप्रसिद्ध है। पुरी के इस मंदिर में तीन मुख्य देवता विराजमान हैं। भगवान जगन्नाथ के साथ उनके बड़े भाई बलभद्र व उनकी बहन सुभद्रा तीनों, तीन अलग-अलग भव्य और सुंदर आकर्षक रथों में विराजमान होकर नगर की यात्रा को निकलते हैं।

श्री नीलाद्री बिहारी कोटि कैबल्यनाथ जगन्नाथ महाप्रभु रहस्यमय पुरुषोत्तम । वह केवल भावनाओं और इंद्रियों में पाया जा सकता है। सभी समुदाय, सभी धर्म, सभी दर्शन उनमें निहित हैं। सभी पुरोहितों ने उन्हें अपना आदर्श माना है। वह पवित्र तीर्थ कलियुग का सबसे पुराना तीर्थ है। श्रीवश्र खंडशाला जगन्नाथ महाप्रभु का प्रिय निवास है। इसे ही हम श्रीमंदिर कहते हैं। जब आप किसी दर्शन के लिए जाते हैं तो सिंह द्वार से गुजरने के नियम हैं फिर पहला गुमट (मंदिर) है जहां पतितपावन हनुमान निवास करते हैं आप देखेंगे कि कदम कहाँ से शुरू होते हैं। तीसरे चरण धाप के बीच में ढाई फुट लंबा और एक फुट चौडा एक काला पत्थर सीढ़ियों पर पड़ा है। इसे यमशिला कहा जाता है इसकी महिमा अद्भुत है - अजीब चट्टान। जैसे ही आप सीढ़ियाँ चढ़ते है, आपको उस तीसरी धाप के शिला पर कुछ पल खड़े रहना होता है और कुछ पल के लिए नीलेचक्र को देखना होता है। यह आस्था और भावना की बात है। नास्तिक बहस कर सकते हैं। जगन्नाथ महाप्रभु सभी तर्कों और व्याख्याओं से ऊपर हैं। हाँ, यदि तुम उस चट्टान पर हाथ जोडक़र खड़े हो जाओगे, तो सारे ज्ञात और अज्ञात पाप धराशायी हो जाएंगे। याद रखें कि जब आप लौटते हैं, तो सावधान रहें कि उक्त शिला को अपने पैरों से न छुएं, अन्यथा पाप शरीर में फिर से प्रवेश करेगा।

जगन्नाथ पुरी, ओडिशा कैसे पहुंचें-

ओडिशा, हवाई, रेल और सड़क, तीनों मार्ग से जुड़ा है। ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर से जगन्नाथपुरी 60 कि.मी. दूर है।

हवाई मार्ग : भुवनेश्वर, निकटतम हवाई अड्डा है यह भारत के सभी राज्यों से जुड़ा हुआ है। सरकारी और निजी एयरलाइंस की कई फ्लाइट्स हैं जो भुवनेश्वर को कोलकाता, दिल्ली, रायपुर, हैदराबाद, नागपुर,वाराणसी, मुंबई और चेन्नई जैसे शहरों से जोड़ती हैं।

रेल मार्ग से: भुवनेश्वर, नजदीकी रेलवे स्टेशन हैं। रेल से ओड़िशा की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद उठाया जा सकता है। यात्रा सुविधाजनक भी है और आरामदेह भी। कई ट्रेनें भारत के अन्य कोनों को ओड़िशा से जोड़ती हैं। कई महत्वपूर्ण ट्रेनों की सेवाएं, राजधानी, कोणार्क एक्सप्रेस, कोरोमोंडल एक्सप्रेस आदि ओड़िशा के अन्य जिलों गंजम, खुर्दा, कोरापुट, रायगढ, नौपाड़ा-गुनुपुर में

भी रेलवे स्टेशन हैं।

सड़क मार्ग से: भुवनेश्वर, राष्ट्रीय राजमार्ग पर आता है, जो चेन्नई और कोलकाता जैसे महानगरों को जोड़ता है। इस वजह से जिन्हें सड़क पर लंबी यात्राएं करने का शौक है, उनके लिए ओड़िशा पहुंचना ज्यादा आरामदेह और आसान है। ओडिशा में सड़कों का व्यापक नेटवर्क है। इससे ओडिशा के कोने-कोने तक सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है। राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 5, 6, 23, 42 और 43 राज्य से होकर गुजरते हैं। इससे सड़क से यात्रा आसान हो जाती है।

भुवनेश्वर से पुरी के लिए यातायात

भुवनेश्वर से पुरी के लिए नियमित बसें आराम से मिल जाती हैं। यहां स्थानीय यातायात व्यवस्था में बस और टैक्सियों की अच्छी सुविधा है। सैलानियों की सुविधा के लिए उड़ीसा पर्यटन विकास निगम कोच बसें भी चलाता है। कटक से 47 किलोमीटर की दूरी पर खुर्दारोड रेलवे स्टेशन स्थित है जो पूर्वी रेलवे के हावड़ा –वालटर ब्रांच लाइन पर स्थित है। यहां से पुरी के लिए एक रेलवे लाइन जाती है। खुर्दा रोड़ से पुरी 45 किलोमीटर की दूरी पर है।

सीधी ट्रेन हावड़ा,मद्रास, आसनसोल, तलचर से मिलती है। कटक, भुवनेश्वर एवं खुर्दारोड से यहां तक बस सेवा उपलब्ध है। पुरी से भगवान जगन्नाथ का मंदिर लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ●

FIRE
CYBER

STAG

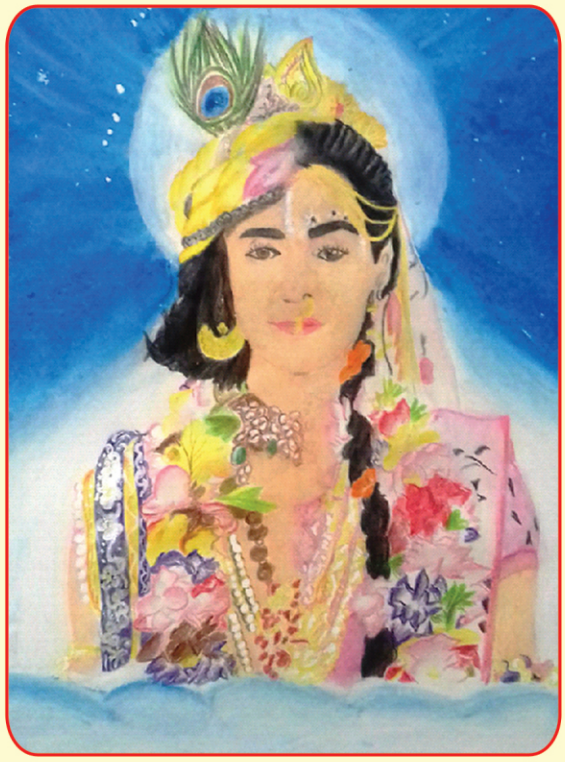

मुरलीधर पण्डा
सुपुत्र – गंगाधर पण्डा, सहायक पर्यवेक्षक

तितली पण्डा
सुपुत्री – गंगाधर पण्डा, सहायक पर्यवेक्षक

प्रितीप्रज्ञा नायक
सुपुत्री – प्रियव्रत नायक, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

दिव्यजीवन महांति
सुपुत्र – जोगानन्द महांति, सहायक पर्यवेक्षक